

॥ श्रीभक्तकरुणासागरश्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥
 ॥ अथसकृतचंतामणीगंधप्रारंभः ॥ अथसक
 रतासंतआचारजवरननकोलंग ॥ अथपुं
 मोभवउतपंनविभुतीदयादेखावंनकोलंगः ॥
 ऊपरमसकृतसाम्प्रथपत् ॥ नीजकेवलकरुणे
 स ॥ एकअखंडस्वरजजेहनके ॥ स्वयंपकास
 सधेस ॥ १ ॥ तेहीपतनेनीजस्रष्टरचीजवोहो
 तजतंनकरजासे ॥ तीनकीसाहायकरंनसुर
 सरजे ॥ ईडचंद्रवीतासे ॥ २ ॥ श्रीरुरजतंमगु
 णसात्वीकसरसत ॥ पुरससक्तीजेहीआड ॥
 कीनधराचरअचरधरंनकु ॥ अवीकासनगो
 नाड ॥ ३ ॥ सुरकेतेजपकासपरंमते ॥ हरहीसक
 लसीतलाई ॥ जातेसकलभवकेजीवतंनकु ॥ अ
 तहीहोतअकुलाई ॥ ४ ॥ क्रीपावंततबअगंमवी
 लोकीत ॥ कीनेहुपवंनपसारा ॥ जीवसकलतं
 नअचरचरनके ॥ स्वांतीकरंनकुसारा ॥ ५ ॥ पु
 नीखटरसरसकेरसलेवंन ॥ दिवंनदीनदया
 लु ॥ खांनपांनअंमतरतभोजंन ॥ पुरीततात
 पतीपालु ॥ ६ ॥ श्रीरुखटरत्यगतकीयेकृतारंत
 लागतसकलसकांसु ॥ उलटपुलटसुखनवी
 ननवीनके ॥ जीवकुकरनविरंसु ॥ ७ ॥ श्रीरसो

॥स.चं॥

॥६८

जमेकेतीकवरनु॥मनुसजातधरधरकी॥पज
वाहंतहयेसुकपासंतसुख॥एकएकतेसरसर
की॥८॥जेहीजीनकेसुक्रीतसरभरही॥देतपी
तुप्रभुताई॥मोरसकलसंमदृष्टचराचरा॥कोऊ
सेनहीकरुकाई॥५॥येसेपरमदयालतिहालन
अरवीलसंसरजतजके॥लेतसंभालसकलतं
नतंनकी॥आपत्येकरतउपजके॥१०॥याविध्य
नीजकीनघातिरंतरा॥अंतररहीतसपेखी॥४॥
पीरहतनहीप्रायअंतमध्य॥जीनत्येकछुआपे
षी॥११॥तेहीपतकेनीजपरंमपसारंन॥कारंन
अंससमेत॥आपत्येकीयेसकलकुलआलंम
जांतीतरखतसहेतु॥१२॥एहीपरकारनके
जीनुअंतरा॥पीयेभवपरंमपराई॥जदपीनहो
यनीजपीयेपतीनकु॥तदपीनरचेरचाई॥१३
॥इतीश्रीसकृतचंतामणीग्रंथेखलपरीहारन
देखावंनकोअंग॥१॥॥ज्योकररवीकेखेतनमे
खड॥उपजतनाजवीरोधु॥ज्योकरताकररवीषे
तंनभव॥नियजतखलपरमोधु॥१॥तेहीजीवंन
कुउलटपुलटकर॥लेतसकलउरजाई॥देइप
रमोधपतावतप्रभूषदा॥करंनआपजीवकाई
१॥पणनीजकरतालेहतनलेपटा॥धुरतपणे

जगधुते ॥ अंधे जीवें न कुत ही सुकत ॥ उगते वेस
करतुते ॥ ३ ॥ एक लेपट एक त्यागा ही कलपीत ज
लपीत उभये अखारा ॥ एही भवसागर अंधप
रमकु ॥ उग उग खाय उगारा ॥ ४ ॥ ओर उग न की
कुत गनंत हे ॥ असं न व सं न जे ही धं न्य के ॥ एही स
ब अनीत्य पदारथ के क्रत ॥ सुगत मां न लगतं न
के ॥ ५ ॥ सो तो भवी त अं न्यो अं न्य घातक ॥ चालत
जुग परभाई ॥ ते ही अवगुन की गत तन करत
परभासे पती जाई ॥ ६ ॥ पण धुता जीवें न के जे ही
जंत ॥ ता परपती खुत साई ॥ आप न्ये अं स करे
दुठ उनसे ॥ धुरची भे स भर माई ॥ ७ ॥ परपंचे प
रमेश थपीत व ॥ मनु सजात के जव ही ॥ ती नुरे
हे नी करनी परपंची ॥ धर परपंची तव ही ॥ ८ ॥
हरी के धोरवे जीव सकल तां हां ॥ पतंग वत थई
पर ही ॥ धं न्य हरवे के धर म म ही जई ॥ को ई काले
न ही तर ही ॥ ९ ॥ जो कदपी साचे पद होय तो ॥ धं न्य
देतां न ही धोरु ॥ मणी लेई ने मुक्ता कल देतां ॥ जीन
के दल न ही दोरु ॥ १० ॥ पण या तो वई राग भक्ती ओ
र ॥ जां न न ही लवले सा ॥ कं कर देई पार सपद प
तवे ॥ गत वे करी उपदेशा ॥ ११ ॥ आग लमे धर म स
बे स वी मुख कर ॥ अधर म धर म म नावे ॥ निजने

स.चं

॥६६॥

ननकेअंधसकलकु। अदभुतकरीजनावे॥१२॥
॥ इतीश्रीसकृतचंतामणीग्रंथेकृताफुरमान
परमवीसेसअंसदेखावंनकोअंग॥२॥ तबक
रतातीजसधरुहकंससे॥ हंसकुदीयेपगई॥ जे
तनेभरजुगकेजीवंनकु॥ तीनकुदेहोचेताई॥
तेहीत्येपरखपरदेठगीयंतकी॥ नैननवीनसेदेखा
सारअसारनवेरकरनसे॥ दरसेभैखसवेरवी
२॥ जेहीअंससामांत्यअलपगत्य॥ तिहीनसमके
जदपी॥ भलेजावोपरपंचपक्षमे॥ तीनकेधोरखत
तदपी॥ ३॥ पणतीजअंशवीसेयसधरसे॥ तेहीन
जायठगाई॥ परमपोकारकरोजुगजाहर॥ अन
भेत्यावलखाई॥ ४॥ तेहीत्यावसुणतांमेसमरुही
वीसेसअंसववेकी॥ भवसागरमेखंडमहीत
व॥ बोहोतघत्येहेएकी॥ ५॥ सुरसीघज्योरणर
कलमल॥ जीनयेसकलडगाई॥ स्योंकोईअंसवी
सेसजगेतो॥ एकअनेकजगाई॥ ६॥ ओरुजेही
कीयेवेहेवारपक्षमे॥ देखोपरमपरासे॥ सकल
जाहांनकेजीवजंतकु॥ एकहीनरपतरासे॥ ७॥
तीनकेअमलमांहीसबवरतत॥ अगणीतनात
पटलही॥ पणनरपतकीआणपसकलसीर॥ वा
जतएकअटलही॥ ८॥ स्योंआभवमेभरमपसके

देसनगरघरघरही। नीजकरताकेत्यावदीनाम
 ग॥ कुलमुखीयासरभरही॥ ९॥ येसेपंथफसेजे
 हीजीवंत॥ गततीनाहीतेहनकी॥ तोलमहीपा
 संगबराबर॥ हरमतजहांनजेहनकी॥ १०॥ बीन
 हरमतकेअंसअवत्सपर॥ तीनकीकुनचलाई
 गासकुसमरजायबहायन॥ कनकरखोवचाई
 ११॥ तवत्येहोहसकलजंतसनमुख॥ आरत्यवे
 तसत्येही॥ नांहीजरुसुत्येकीतिनकु॥ जेहीक
 रतारअत्येही॥ १२॥ इतीश्रीसकृतचंतामणीग्रं
 थिसंतआचारजवरननकोअंगपारंभ॥ १३॥ स
 तजुगत्रेहेतादापरकलीके॥ जुगचतुरकेजेही
 बरनुहसंतसीरोमणीतीनके॥ सुनोसकलची
 तदेही॥ १४॥ ओरुआचारजसहीतभक्तसदा॥ भीन
 भीनकरीभाखु॥ साहवगतकेलससवनकु॥
 समरुपरेत्योदारु॥ १५॥ सुनकादीकसीवसेसस
 हीतदरु॥ रवीससीवीसुवीरंची॥ एहीभक्तनीज
 आद्यअवत्यधर॥ विदवदीतवीतसंची॥ १६॥ रचीत
 अष्टपालंनसंघारंन॥ रहोअवत्यसीरधारी॥ तीन
 पतीकेसीरुहकंमनभावत॥ धंन्यतायबलहारी॥
 १७॥ सुनकादीकसुखतजीतसकलईत॥ बुद्धचरज
 भजतांमु॥ चंदसुरभवकरतउजेता॥ निकनलेत

स. चं.

॥ ७० ॥
पृष्ठा

मु

वीरोंसु ॥ ५ ॥ दूरुप्रवीचलतपकीनबालकतंन
रखवसुतनवजोगी ॥ खलकजांहोनकेनरपुह
तेकंचीतभयेतभोगी ॥ ६ ॥ एहीसतजुगकेभक्त
भरमवीन ॥ सारधारसतसेतु ॥ तंनमेंनसही
तसनातंनकेजेही ॥ पत्नीकेसकलसहेतु ॥ ७ ॥
सुखनारदपेहेलादभभीक्षण ॥ ब्यालमीकअंगीर
अंम्रीखप्राद्यभक्तवैहेताके ॥ जपतपभयेसधी
रा ॥ ८ ॥ सुखकेतपवनवृक्षसरायत ॥ नारदकीर
तभजंनही ॥ सीरसाटेसमरणपेहेलादन ॥ बोहो
तकतातरजंनही ॥ ९ ॥ भयेभभीक्षणभ्रातविरु
तज ॥ गयेसरंनरंमनकी ॥ स्नेहबंधरजतायकर
पकी ॥ गनीनआंचअमलकी ॥ १० ॥ ब्यालमीक
वंनखंडवीपनके ॥ रंमरतंनजसभाखे ॥ उमर
धरसरभरतंनतजलग ॥ आंत्यकरतनहीचषे
११ ॥ अंगीराअलुकरमभरमसे ॥ अलगसदाजु
गसेती ॥ रहेसनातंनकेजेहीसनमुख ॥ पावन
पदपरमेती ॥ १२ ॥ अंम्रीखवृत्तकेरखदरवासा ॥
नेमचुकावंनगयेवु ॥ पणनहीटेकतजीतीनकीप
रा ॥ चक्रसुदरसंनथयेवु ॥ १३ ॥ संतराघवानंदनके
नीज ॥ भयेचतुरजंनजेही ॥ रंमानुजनेमानुजमा
धव ॥ वीसुसामसदतेही ॥ १४ ॥ ओरुउधवअकरु

॥स.चं.

॥७१॥

मन्त्रवतारजेहंनके॥ तारंनजुगजंतनके॥ २४
बडेबडेभुपभेवलेईआग्ये॥ धरीतकरीततंतमं
नही॥ तोतीनसेतहीपांणपसारत॥ जीतयेरह
तममंतही॥ २५॥ इतीश्रीसक्रतचंतामणीग्रंथे
कलीकेसंतआचारजदेखावंनकोअंग॥ ४॥ अब
केतवीतपंथकलीकेनीज॥ तीनकेधरमसुत्ये
हु॥ संतभक्तआचारसहीतजीनु॥ धरहीकपट
केवेहु॥ १॥ अलकेपेजरचीतभवभरमीत॥ परमी
तकरेइतराई॥ ज्ञानभक्तीवैरागनअंतर॥ उपले
करतसराई॥ २॥ आपत्येपसपरमकरीमांनत
खट्दरसंनकेनेदी॥ नीजकरताकेसावलहत
नही॥ फोगटइतकेफंदी॥ ३॥ जोकदपीकरतार
परमकु॥ न्यावसहीतलखजांने॥ तदपीतंघाक
रीततोयभल॥ फरकेदेखाईतज्ञाने॥ ४॥ पणया
तोनीजलसलहेबीन॥ बोधकपटत्यागंतके
मतलबएकयुपंतडरअंतर॥ मीतहरतकुधंस
के॥ ५॥ ईश्वरताअनुभवतमांहांनपद॥ वरथवे
तअनीमांनी॥ सुचरकीगत्यपचीतपदास्थक
रतवातअसमांनी॥ ६॥ त्यागदेखावतपण॥ तस
करसंम॥ ध्यानबलाईबगके॥ दुनीवगतकेदां
महरनकु॥ परपंचीरगरगके॥ ७॥ जीवतारंन

कीगरजनजीनकु ॥ तीजस्वारथकेलोभी ॥
 शीपहरामीसकलसकांमी ॥ मोक्षनदेवेसो
 भी ॥ ७ ॥ वीतरागतकेवेसदेखावत ॥ ईडआ
 कफलजेसे ॥ देतदांतसुक्तीकोमुखसे ॥ भांडन
 रपकेतेसे ॥ ८ ॥ दरबवांतअथकारीनरपकु
 उलटीभेवचढावे ॥ परसादीनकेदेईपरमोधु
 धांगेपायपरावे ॥ १० ॥ इतीश्रीसकतचंतमणी
 ग्रंथेरजनीतीधर्मदेखावंतकोअंग ॥ ५ ॥ रायन
 हीकोइत्यायकरंनके ॥ दरबवांतसबअंधु ॥ सु
 रचीभेरुकीभेवलेयंतके ॥ तीनकेहोयसमं
 धु ॥ १ ॥ नरपतहोयवीचारवांतजो ॥ निवनलेभ
 गवाकी ॥ साचेसंतनसोजचरावे ॥ एतोगत्यव
 गवाकी ॥ २ ॥ जोजनउलटेकरेनुछावर ॥ दरब
 वांतकुडंभी ॥ तेनकरेकस्यांणकोयतु ॥ वरथ
 देखावंतपंभी ॥ ३ ॥ पंवेपंवमोक्षकेदाता ॥ झा
 ताथईगुरुमतवे ॥ परमअरथकीप्रीष्ठनजी
 नकु ॥ मुक्तजुगतकीजनवे ॥ ४ ॥ पणनलहेप
 रपंचजेहुतके ॥ नरपतओरुस्त्रीमंतु ॥ ओषा
 देईअदकाईलेवंनकु ॥ एधुतागतीवंतु ॥ ५ ॥ ति
 हीधुतायोंतरपतीतीबीन ॥ जांण्यनजनम
 धरीने ॥ लंचलेईपरपंचपंथकु ॥ यपीतवसा

स. च. चकरीने ॥ ६ ॥ तब आ जुग के जीव सकल सबरा
जय पीत त्पे भर मे ॥ ते ही अपरा धं न प्रलप आ
॥ ७ ॥ युस त्पे मरी मरी जाय अधर मे ॥ ७ ॥ कोटी क दर
बधरे जो आगे ॥ कपट आचार जजब ही ॥ न्याय
वंत जो नर्य होय तो ॥ हाथ न छीवे तब ही ॥ ८ ॥ जब
सिराज करं नती न कुधं न्य ॥ सार प्रसार ही बुके
सत पक्ष कु करी त सथापन ॥ असत उयापे न
जुके ॥ ९ ॥ जो जो भये आगं म के तर पत ॥ अवतार
दी क सोई ॥ हनी कु पंथ स ही त दान्य व कु ॥ दिव वं
चापे सोई ॥ १० ॥ राय को हुन की लांचन लेते ॥ अस
त धर म की आगे ॥ नीती बंध न्याय के तर पत ॥
सो कौं अनहु त पागे ॥ ११ ॥ जब त्पे नै स सकल सं
मपुरं न ॥ राज कर त न्हे कंटी ॥ सत धर म पर ता
प पुनी त से ॥ वी धं त सब न से वंटी ॥ १२ ॥ नी ज के
धर म सकल सं मपुरं न ॥ राज करं न के सोई ॥ वे
द पुरां न साहा र सं म जुक्त ॥ सुगतार मे न के
ई ॥ १३ ॥ न्याय करं न तीर गुं न के गुं न से ॥ यालं न
स गु न र ही त कु ॥ दान पुं न्य उदारं न की गत्य ॥ ज
ग फल र जो ग ही त कु ॥ १४ ॥ सा ली क से सत मां
सकल कु ॥ बं दी जं न जा च क के ॥ स ही त वी प्र
रु ख ट दर सं त से ॥ अं मृत सं म वा च कु के ॥ १५ ॥

ताडकरंन ओरुडंडतमोसे। नेमेजकरखंनकु
 ओलंगननही करतकालकोहु। आपसेधरम
 पखंनकु ॥ १६ ॥ एहीविधीन्यायचलतसोईनर
 पत ॥ उभयेलोकजखवंतु ॥ मरतलोकओरु
 देवमहीजीतु ॥ बज्येडुंदभीअंतु ॥ १७ ॥ ओरुअ
 वकेतोरायकलीनके ॥ असतअधरमीउलटे
 अंत्यायंनकेन्यायचुकावत ॥ कबुनचालतसु
 लटे ॥ १८ ॥ चलनहुलनसबचेनअनीतके ॥ हे
 साकरंनहुमेसी ॥ वाचकाचकेवहीतवीटंडी ॥ नि
 मनहीनवलेसी ॥ १९ ॥ सचेकुजुगार्दवतावत
 असतनकेसतकरही ॥ लंचलेईउलटीसुलद
 यत ॥ अधरमेउदरभरही ॥ २० ॥ जोकबुदंतक
 रेतोकीरतके ॥ अहेरंनसाटसुयंनके ॥ तीन
 केफलप्रापतकीगतीयां ॥ ज्योकराउसखोयं
 नके ॥ २१ ॥ एहीविधीराजरीतकलीजुगकी ॥
 जेहीनरपतनरकरही ॥ सोसुक्रीतप्रापतफ
 लअंत्ये ॥ घोरनरकमेपरही ॥ २२ ॥ जबनरपत
 गत्ययेसीजांतके ॥ अंतकालकेफलही ॥ आप
 न्येकीयेआपभुगततही ॥ तबत्येचलोसुचलही
 २३ ॥ जोसुपतभगवांनभजेतो ॥ राजरीत्यसब
 करतां ॥ आगलेतपअवकेउभयेमील ॥ धारल

स. चं. ग्येनहीतरतां ॥२४॥ राजधर्मसंखेपसुनाये
 अनीतनीतगतजेही ॥ ओरुकरतीकेअंतमी
॥१३॥ लनफल ॥ कहीसकलवीधीतेही ॥२५॥ इतीश्री
 सक्रतचंतामणीग्रंथेसुधर्मधर्मसंखेपदे
 खावंनकोअंग ॥६॥ तबत्येजेहीजीनुधर्मचला
 वत ॥ चहोसकलसतवंतु ॥ तेहीतीनुदेवउपा
 सकसरभर ॥ सकलफलेसबअंतु ॥१॥ नहीतर
 तोपरपंचधर्मसे ॥ इतिडुनीयांठगखाशीप
 एजीनुदेवउपासककेपद ॥ अंतमीलेनहीता
 ई ॥२॥ तेमाटेपरपंचनभेनही ॥ देवधर्ममेत
 बही ॥ निनमहीरजअपचीकटमे ॥ समेनही
 लोजबही ॥३॥ एहीसकलसबजतमतकीग
 ता ॥ लोकीकसुभसंसारा ॥ जडतंतकेउपलेअ
 बुकरमीत ॥ कीनमर्मअनुसारा ॥४॥ पणक
 रतातीजसकलअंसके ॥ अएनीआयअज
 भवके ॥ सहीतसकीओरुपुनीतपुरसतंतन
 उपजावंनजेहीसबके ॥५॥ तेहीकरतारंतप
 रमपुरसके ॥ न्यावलहेजंतकोई ॥ अवनीरची
 तबत्येजीनुअबलग ॥ अकथरहोपदओई
 ६ ॥ इतीश्रीसक्रतचंतामणीग्रंथेक्रताअक
 रतालक्षदेश्खावंनकोअंग ॥ प्रारंभ ॥७॥ सीर

गुंन ईष्ट सकल जेत न्ये भर ॥ सो तो क्रता करत
 के ॥ जीन के अनी तप दारथ के तंत ॥ अवधी का
 लम रत के ॥ १ ॥ नीर गुण बं ह अ करता अनुचि
 त ॥ अंत सबीनु संकल्प के ॥ तो आभव के करं न
 हार के ॥ उपजे की नुकलप के ॥ २ ॥ बीनु कल्पे
 चर अचरन के तंत ॥ वचीत्र भात्य कौ होई ॥ ल
 खचोरा सी जीव जंत के ॥ अगणीत करत सतो
 ई ॥ ३ ॥ जो के हे सो अकरत अदबद से ॥ आपो आ
 प उपज ही ॥ चकीत चरीत्र चीन के भव भीन
 बीवीधी भात्य कुण सज ही ॥ ४ ॥ पुन ही ने म वि
 नु आपो आप से ॥ हवीत सकल उतपत ही ॥ च
 तुरखांण घाटन की गणती ॥ रखत कुण जतम
 त ही ॥ ५ ॥ बीनु जतमत ओरुनें मवीना तो ॥ अ
 गणीत होय उपज में ॥ लखचोरा सीन की न ही
 गणती ॥ नेक विनायनी पज मे ॥ ६ ॥ पणते तो न
 ही वेदवदीत मे ॥ बीनु परमाणु प्रभाई ॥ अणुनी
 आघर जतज की उतपत ॥ गणती की ये सचा
 ई ॥ ७ ॥ ते ही गणती घाटन की अंदर ॥ अवतारा
 दीक आये ॥ मछ कछ देरारं मक्र सलौ ॥ नवीन
 वेसन ही लाये ॥ ८ ॥ न ही न चली मगदुर को हुं
 न की ॥ क्रता करत थी भीन ॥ नीची नाडा करी

भगभीतर ॥ नीकसेहोयआधीन ॥ १० ॥ जोउपजे
 परमाणवीनाकोउ ॥ करतगणीतसेवाहारी ॥ तो
 क्योभयेनभवसेफरकको ॥ चोवीसईसअवता
 री ॥ १० ॥ मासेनीजकरतारकलपवीन ॥ अणु
 नउपजतअंनही ॥ तीनकेकरतमांहीसबकर
 तत ॥ सुरसुवीनरसुनीजंतही ॥ ११ ॥ तेहीसक
 रतासंमथकीगत ॥ लहोवीनासबपखही ॥ ज्यो
 मरतककेजीववीनातंत ॥ सकलअंगतीखसी
 खही ॥ १२ ॥ ज्योजेहीलक्षपुरातंतकेपुनी ॥ प्रबके
 सकललखेउ ॥ नीरगतकेवासीसुंतकेपद ॥
 जीनमेअटकरहोउ ॥ १३ ॥ तबत्येसकलउपासं
 नभवकी ॥ वीसेसअंसआयंतकी ॥ तीजकर
 तारंतकेपगवायल ॥ जगजनुनीजायंतकी ॥ १४
 तीनुहदेखसबकीयेसथापन ॥ सुरतीसकलजां
 हांतमे ॥ पणतीजकरताआयेवीनाभव ॥ क्योक
 रीलखेध्यांतमे ॥ १५ ॥ ध्यांतवीनाओरुदृष्टपरवी
 न ॥ तीनुहथापकोथपही ॥ वीनुथापंतवीसरंत
 केजेहीपद ॥ जीनकेजापकोजपही ॥ १६ ॥ तेहीमा
 सेनीजकरताआयकु ॥ भजतनांहीभवमांहीजे
 हीतेहीपंथफसेजीततीतमे ॥ भयेकरतसरनांही
 १७ ॥ करतसकलखुदकेसंकल्पके ॥ जीनमेक

तानकोई॥ तदीपतायसबईएकरतके॥ नीज
 कारननहीसोई॥ १८॥ नीजकारंनबीनक्रतव
 नकेपद॥ मुलेसकलभरुसे॥ करताएकअनेक
 पक्षही॥ भीनभीनभवमुसे॥ १९॥ मुसंनसकल
 आचारजकेजीनु॥ कीनुनहीएकताई॥ अल
 गत्येजेहीअंसअनीनहोई॥ जीनमेरहोभूयाई
 २०॥ एहीपरकारसकलकुलवीलमे॥ ब्यावितके
 ज्ञानु॥ नीजपतीपरमसकरताकेसदा॥ रहोसक
 लअज्ञानु॥ २१॥ तेहीकरतारंनकेअभीप्रायेतन्या
 वदेखावंनसारु॥ क्रताकरतअकरतनवेरंन
 कारंनमुजअवतारु॥ २२॥ विदवदीतआचारज
 अनुभवी॥ अगणीतमेखमयेवु॥ अकरतपदप्रो
 रुसकरतकेक्रत॥ कथीकथीसकलगयेवु॥ २३॥
 एहीवीधीआचारजअनुभवीकी॥ ओरलीगतअ
 वील्यांनी॥ तोखुदकीकुनखबेरखलकमे॥ करही
 दुसरकोज्ञानी॥ २४॥ यातेसकलजाहानअजभव
 लो॥ विदसहीतवीसतयेवु॥ नीजपदसेईतकेअनु
 करमीत॥ क्रताकरतअनुभयेवु॥ २५॥ तदपीता
 यमुजबचंनवीलोकीत॥ करहीतोयततवैतु॥ आ
 यअंतमध्यखोजकरीतवीत॥ उचरोसकलस
 हेतु॥ २६॥ जीनुसंकल्पकेभयेसकलतुम॥ अण

स.चं

७५

नीआद्यसुरभंसु॥तेहीपीतुकीपेहेचोएपनकोत
कु॥जीनकेहोहुकुलवंसु॥२७॥पुतीपालंतपोस
एकरननेतेई॥जीतुहुकमसेदेवा॥तेहीकरतानी
जवीसरपरीनके॥उतइति सबवीलमेवा॥२८॥
सोउतइतिकेसावलहीतजीत॥पुतीदेखुहुमम
गतीयां॥प्रकृतीआद्यओरुपुरससहीतइतिकी
त्येकीयेउतपतीयां॥२९॥तबसेखोजकरहीस
कलमम॥कारंनकृत्तालखेवु॥अनंतसकलसा
वंनकीनीजंगम॥तेहीपदअचलअखेवु॥३०॥
जबतेसकलहोहुममवचनां॥पतीतपेमअड
रागी॥संसकृतओरुश्रुतीसमरती॥कृताहीन
लखयागी॥३१॥संसकृतओरुश्रुतीसमरती
हंमसेअधीकनजांतु॥देहीतरकबोसकीबाब
ज॥मतभूलोनीजभांतु॥३२॥नीजभांतुसोईत्या
वसहीतके॥आपनुआपअनुभवही॥तेसेहीक
तासावकेतरणीत॥मीलेसजातहीतबही॥३३॥
वीनुहसजातसीघांतसकलजेही॥सोनपीतु
आपन्येही॥वीतुपीतुकेपरभावीकजेहीपदकु
नकनकीयेसन्येही॥३४॥आद्यअंतमधजनम
मरनकी॥तेहीनसाहायकरंनके॥तोतीनके
उपासनकेजन॥कोहोवोंकरीतरंनके॥३५॥

बीतुतरंननकेलसरखंनमे। कुननफानरलोई
 जबसेतीजकरताकरुणामये। आवलखाबुहमे
 ई॥३६॥ पणआवंनकीजेहीग्यंमगतीया। देवस
 हीतदुरलभही॥ तोतुमेरीमतमोईसीलनकु। सु
 सकलनहीसुलभही॥३७॥ पणजोकदपीआई
 मीलोसुज। करीसमरपणमंनही॥ तोपरसाव
 परमपुरसकु। जोहोयसंतसजंनही॥ ३८॥ सं
 तसजंनमेरखुनअंतर। जीतुहंसैरतहोई। उ
 भयेकुअवीगतकरताकी। गतीजनावुहसोई।
 ३९॥ ओरुआपनजेहीअंसतेहनके। एहीतंन
 मेतंनजेही॥ तीनकीपणनरेणवरणीतमे। र
 खुनहीसंदेही॥ ४०॥ तोतुमहीफेरीओरयसमे
 सुदेकवंनमुरजाई। जीनमेखोजननीजखावं
 नकी॥ तीनमेक्यौवीलमाई॥ ४१॥ अहेजीवतु
 मजुगनजुगनके। भुलैपंथभरममे। छलकत
 वंनकेडंभकपटमे। क्यौफसरहेसरममे॥ ४२॥
 सरमेसरमडुबहीसबजंन। भिडकीलाहास्क
 तारे। सरजंनहारवीनाकीबाबज। तीनमेकु
 नउबारे॥ ४३॥ जबसेआसनहीतरन्येकी। अंत
 कासपस्ताई। जीवखुनकादेवंनबदला। परोचो
 रासीजाई॥ ४४॥ चोरसीनकेजंतंममरुनमे॥

(स. चं) जुगन जुगन वही जाई ॥ ये सी कष्ट सहो पण हंमसे
 मीलो तही कौं जाई ॥ ४५ ॥ जेही मन खादुर लभ
 ॥ ७६ ॥ देवंत कुतेही मन खातु मपाई ॥ बीन सत गुरु फे
 री के भव भुगतो ॥ धी क आत महत्याई ॥ ४६ ॥ एही व
 चन सी ख परम अरथ के ॥ सुनो सकल नर ना
 री ॥ पंथ पक्ष बीनु लक्ष न्याय के ॥ वदीत व पर उ प
 गारी ॥ ४७ ॥ पण जीनु गती परम उत कही ॥ उरु
 अरस की अलीयं ॥ सार असार न वेर करं न की
 जो होय ज्ञान अमलीयं ॥ ४८ ॥ पुनी प्रापत्ये पत की
 आरत कु ॥ खोजत अती वे हेवंतु ॥ तीन कु पर ख
 परे एही पद की ॥ नल हे जीव अचेतु ॥ ४९ ॥ अचेत
 कु फेरी तेही चैता वत ॥ भव के भर ममे टाई ॥ नीज
 सुख की मांनत नही पुवल ॥ पर सुख से पती जा
 ई ॥ ५० ॥ पर सुख से पती होय तो होय भल ॥ नीज पती
 के जस गाई ॥ अन्यो अन्य अतं त सुखं त से ॥ जावही
 की रत फे लाई ॥ ५१ ॥ सुने की रत जेही नीज सर जं
 त की ॥ अंतर भाव सहेती ॥ पुनी सत संघ करत सं
 तस के ॥ पावही पद पर मेती ॥ ५२ ॥ पर मेती सोई
 नीज करता पद ॥ खेवट सदन सबेही ॥ पर स आद्य
 ओरु प्रकृती सही तगुंन ॥ सजं नहार सब जेही
 ५३ ॥ बीन सर जे कष्टु वनेन कं चीत ॥ कसे वीना

वोंहोईतेहीकरननकरतारंनकीगत॥स
 कलसुनावुहमोई॥५४॥इतीश्रीकृतासंकल
 प्रलकमदेखावंनकोइंगकारंनक्रीयाओरत्मेंका
 रज।काजचतुरतोसोई॥एकएककेअनुकर
 मकरतमे।प्रगटदेखोसबकोई१नीजकारं
 नसोईकृताआद्यसद।क्रीयाजीनुसंकल्यही
 कारजभयेसकलसबउतपंन।काजपदार
 अलपही॥२॥पुनीकारंनजेहीसंकलयकीपर
 क्रीयाईछउतपंनही॥कारजहीरणग्रभचही
 तंनवीत॥काजसकलजडतंनही॥३॥एहीप
 रकारकरतकरतावीन।बनेनन्यावुसहीत
 मे॥कारंनसोकारजमेदरसीत।देखोप्रभा
 वहीतमे।४।प्रभावहीतसोईअखीलसकलभ
 वाकरतकाजसबकोईबुंहादीकभवअएनी
 आद्यकज।कसेवीनातवहोई॥५॥इतीश्रीस
 क्रतवंतामहाभंयेअक्रतपदपरीहारदेखावं
 नकोअंगः॥प्रारंभः॥॥॥॥जबयेकृताकरत
 केकारंन॥नीसेसदनीजपदही॥तावीनुपर्ये
 सकलअकरतके।सीघंतसबकेरदही॥१॥जो
 नपसेरदअकरतकेपद।बुंहाज्ञानकेजबही॥
 तोभवईछउपासंनकेजंन।वहीतहोयमंनस

॥स.चं.

॥७७

बही ॥२॥ उपासनासो इमातपीतासुत ॥ सीस
कुरुसंतनकी ॥ पतीवतानीजपीयुसेवंन
की ॥ पीतसहीततंतनमंतकी ॥३॥ राजंतकीदी
वांनरहीतकु ॥ राखंतजेहीअधीकारु ॥ करेअ
स्तुत्यअमलसेउपती ॥ अंतरनहीपतीयारु ॥
४॥ तैसेहीगुरुसीसमातपीतासुत ॥ ओरुपती
वंतसमेतु ॥ तेहीपणअद्वउपत्यकीरारवत ॥
अंतरनहीसहेतु ॥५॥ हेतरहेक्योंसंमदरसंत
से ॥ ईअधीकबीनुजाने ॥ आपापरसरखुहे
यअंतर ॥ बंसज्ञानअवीत्यांने ॥६॥ एहीपरकार
सकलभवभरमे ॥ वीटंडथइनेसबही ॥ भरमे
भरंमभमेभवसागर ॥ नीजपदपायनकबही
७॥ सेहेअवेरधीकधीकतेहुंनकु ॥ कतावीसु
खनरनारी ॥ बोहोतजतनकीखेपमनुसतंत
गयेसकलसबहारी ॥८॥ अहोपापीफटफट
जीवंनतुज ॥ वीचरेकतावीसरही ॥ जीनकेही
येसकलतंतमंतधंन ॥ सुगतमानसबकरही
९॥ सोभुगतीजवभयेकतगती ॥ लंपटलुणह
रांमी ॥ तीनकीघुनेवारीरोडरोडमे ॥ काडेसकल
बरांमी ॥१०॥ अजंनहारकीसकलसमरधी
करीखराबीखईने ॥ तीनकीकशुनकरीबंद

गी॥ इष्टभोलव्यादईने॥ ११॥ अरेओअधमअ
 चेतअंधअगन्यांनी॥ कृताअगीतकीतजाई॥ रो
 मरोमरगरगकीजीनकु॥ तथीअजाणीताई
 १२॥ सोक्योवीनभुगतायंतरेहेवत॥ करणी
 कंचीतभरनी॥ येसेन्यायवीनाएहीनाटकस
 वकोईहोयअसरनी॥ १३॥ असरंतसोवीनु
 ईष्टउपासंन॥ दासनहीकोउकीनके॥ ज्ञानभ
 कीवईरागवीनाभव॥ होईजायवरतवहीनके
 १४॥ वरतसकलकेजंमनेमसाधंत॥ पुनीभजं
 नजपजेही॥ ओरुतपतीरथवीद्यावीलोकंन
 नीत्यनेंमजीनुजेही॥ १५॥ तेहीसकलसबलो
 पहवीतरात॥ जीततीतवीकलवीचरही॥ आड
 अटकवीनुकेदकवजवरनु॥ योंजगहोयईतर
 ही॥ १६॥ ईतरईसोआपत्येमतवरतत॥ अधर
 मधरमनजांने॥ वहीतवचंतआचारजकेहो
 ई॥ भ्रमेसकलअज्ञांने॥ १७॥ एहीवीधीवीस्वस
 कलअचराचर॥ जडयशुवतगतीहोई॥ ईष्टे
 वअनुकरमवीनाकुल॥ भवीतघोरअगसोई
 १८॥ जदीपघोरअगहोहंसकलमे॥ आपनुआ
 पवीतरही॥ पुनीकरतारंनकेगंमगतकी॥
 जावहीजांणवीसरही॥ १९॥ जबजावहीनीज

स्व-चं-

॥७८॥

जोणवीसरही॥सहीतपतीआपत्येकी॥तोकुस
रहीमतलबसरजंनकी॥सरमेस्त्रएरचेकी॥
२०॥इतीश्रीसक्रतचंतामणीगंधेसकरतामत
लबदेखावंनकोअंगः॥१०॥मतलबखुदकरव
लकरचेकी॥कहतसुनोसबकोई॥मेरोअंसल
हेसोइमुजकु॥ओरुआपनुआपसोई॥१॥तबते
हंसकरतकीखुदकु॥पोहोचेअंससमेतु॥म्हे
जांतुल्योअंसलहेमुज॥तबत्येबढेसहेतु॥२॥पुनी
पालंनपोक्षणकरत्येकी॥जांनेअंससबेही॥अ
होधंसुआपत्येपतीसीरपर॥पोखेपरमसनेही
३॥एहीपरकारअंन्योअंन्यउभये॥उपजेहेतज
बीत्ये॥म्हेरबांनम्हेरंतकीदृष्टे॥हेरेहमेसतबी
त्ये॥४॥तेहीम्हेरंतकीदृष्टअरस्ये॥अमीचुवत
घंतजेही॥तेहीघंतकीअमीसेअचराचर॥ह
रीहोयस्त्रएसबेही॥५॥हरीयासोचहीतंनसं
जुका॥सहीतपदारथसोही॥थावरजंगमवीश्व
चराचर॥करतकेलसबकोई॥६॥तेहीकेलअ
सनकीदेखीत॥नीजकरतारुहलासे॥कुदर
तखेलखलकरचन्येकु॥एहीपतीनकेआसे
७॥कहीसकलमतलबकरताकी॥अंतरअ
खीलस्चेकी॥आद्यअंतमध्यखावंनकीखच

नीसेवदीतसचेकी॥ ८॥ प्रबकोईमतजांनो
ममउचरंन॥ मितोअलखकेअंसु॥ अपरंमप
रपरमपतकीगत॥ क्पौं करीलहआकंशु॥ ९
पणएतोआपेकरताकुला॥ मोहीमुखंनफुरमा
ये॥ अकलकलाअवीगत रचनारंन॥ पोतेप्रग
दजनाये॥ १०॥ मेसेसीरपरबोजधरंनकु॥ अ
नुभवकोईश्वरीये॥ तीनकोमांननहीमेरेमं
न॥ एतोआपउचरीये॥ ११॥ पुनीकरताउच
रंनकीअंतर॥ कुनकजधरेउथाह॥ अहोनहीजा
नतकोईसुजकु॥ रचनाआद्यअद्याह॥ १२॥ विद्
पुरांनसारुकेव्यगता॥ आचारजयाकरणी॥ ती
जपदरहीतपदारथकेजेही॥ गयेसकलसबव
रणी॥ १३॥ सोवरननकेभयेअरवीलकुलाअं
ससकलअभ्यासी॥ तबयेरहेअजांणआद्यअ
जभवकेभयेवीलासी॥ १४॥ करतवीलासीक
हयेवीसरजंन॥ अजंनहारकुसबही॥ केहंकु
वरअलखएहीकारंन॥ मोमुखउचसेतवही
१५॥ इतीश्रीसकृतचंतामणीगंथेकृतालक्षदं
खावंतअंसअनुभवकोअंगः॥ ११॥ सोहीअ
लखजीनुकरंनउपासंन॥ जेहीसमरनजपध्या
नु॥ तरखपरखवीनुअंगंमअगोचर॥ क्पौंक

सं. चं.

॥१८॥

री होय अवीलांनु ॥१॥ जेही परकारंन के नीज आ
पंन ॥ अनीत पदारथ रहीता ॥ सस्वरूप सुध स्वा
धु सब नये ॥ हीरण्जांन गंम सहीता ॥२॥ तेही प
रकारंन के नीज करता ॥ अलग अलग क्रम जेही ॥
बाजी गरवत सुध संकलपसे ॥ करनहार सब ते
ही ॥३॥ तेही करनत की क्रीया अलोकीत ॥ लोकी
तवरनी नजाई ॥ आपत्ये साक्षी सुपन रचत जे
कोही की सगंम रहाई ॥४॥ पुनी जीत की नही
जनीत को हुनकु ॥ मालंम मे दरचन की ॥ ह्येह
स्तीन पमनु सव्याग्र खग ॥ भीन भीन तंतन तंत
की ॥५॥ ओरव चीत्र भात्य भव भरकी ॥ उपज्यापी
छे दर सही ॥ पणनी पज की पथंम आय कल ॥ ति
हे कीत के पौन कर सही ॥६॥ कवंत जाग्य रही रचे
सकल कुल ॥ अकलीत अकल छपाई ॥ सकल ब
नाव बनायंन के पुनी ॥ मंन कुदी ये देशवाई ॥७॥
पणनी जकी नीपज की मंनकु ॥ जो एपन कंची
त भरकी ॥ अंत सकरण करत कुसुरायत ॥ गं
मन ही नीपज धरकी ॥८॥ आपत्ये अलपत्ये सा
क्षीनकी ॥ एही वीधी अकल कलाई ॥ तोर बुद्ध
लक साक्षी यंन के पत ॥ जीनु करत कुन पाई
॥ ओरु आपत्ये तंन के साक्षी नीज ॥ रुप रंग र

एरहीतु ॥ अंतसकराई ईदशयुनीतत ॥ अल
 गसदातेहीसहीतु ॥ १० ॥ तीनकीबुखबुकावत
 कोहुजंन ॥ हंमकुआपलखावो ॥ स्वांगोउपांगस
 कलनीखसीखह ॥ कोहोकेपोंकरीदरसावो
 ११ ॥ दरसपरसकरननकेजेहीतत ॥ आगेपे
 नीत्यदेखाई ॥ नीत्यनीरंतरआपनुआपते ॥
 जीनयेअतीतरहाई ॥ १२ ॥ जेहीहजरतनीज
 हालहजुरा ॥ आपोआपआपनही ॥ जीनकीगं
 मनहीअहंगएहीमम ॥ तोकरताकुनजंनही
 १३ ॥ पुनीआपनतोप्रगटहालहंम ॥ दुरापणे
 दिखाई ॥ ओरुकरतातोफरकआपनसे ॥ ती
 नकीगत्यकुनपाई ॥ १४ ॥ पणजेहीतेहीपरका
 रसकरता ॥ आपनुआपअनुसारे ॥ ओरनहीअ
 नुभवसरभरको ॥ जीनहीसजातसकारे ॥ १५ ॥
 जबयेप्रथमआपकुखोजीत ॥ गुरुपरंमपेजा
 ई ॥ तेहीकेहेतेहीपरकारसकरता ॥ न्याक्स
 हीतलखपाई ॥ १६ ॥ आपनतोनीजअलपग
 न्येगत ॥ करतासरखगन्येही ॥ सकलजहांनजं
 नजीवअंसकी ॥ रजतजजांएयसबेही ॥ १७ ॥
 पुनीजेहंनकेसुध्यसंकल्पसे ॥ पलमेखलकब
 नावे ॥ आपनतोआपयेनीजतंनकी ॥ जीन

स. च.

॥ ८१ ॥

की गत्य तही पावे ॥ १८ ॥ ते हुते फरक आपन करता
बीच ॥ अगती तके फेरकारी ॥ ज्यों घटके तभ अओ
रुअपरं मसुंन्य ॥ या वीधी क्रता अपारी ॥ १९ ॥ ते
ही मोटे आपन्ये आपन कु ॥ जे ही समरु से पावे
ते ही वीधके अनुभव करता सु ॥ न्यावस ही तलष
लावो ॥ २० ॥ पुनी आपने आपन को ध्यांनु ॥ धरत
दरस होय जे से ॥ वैसे ही क्रता ध्यांन अवीलांनु
करत दरस पण ते से ॥ २१ ॥ ओरु आपन तो प्रगट
पासके ॥ करता प्रोक्ष परं मही ॥ पण चीने मेच की त
पणानो ॥ उभये एक मर मही ॥ २२ ॥ जदपी सक
ता प्रोक्षन होय तो ॥ आगले कपों आराधे ॥ सुनका
दी कसी वसे सस ही तदरु ॥ प्रोक्षवीना कुन सा
धे ॥ २३ ॥ ओरु सुक देवर सव सुत जोगी ॥ दत अ
जगर धर त्यागी ॥ प्रगट पास परमेश होय जो तो
क्यों भये वई रागी ॥ २४ ॥ पुनी तीन कु अज्ञान क
हो तो ॥ तीन से तुम नही मोटे ॥ सुल्ये सकल बुद्ध
असमी मे ॥ पण न भये तीनु जोटे ॥ २५ ॥ जीनकी
की रत वदी तजुग जाहर ॥ अती अद सुत ईश्वरी ये
तुम तो अलप गये उचरं नके ॥ नही नताय सरभ
रीये ॥ २६ ॥ कौ करी सरभर होय तेहन की ॥ वीनु
साधन जप ध्यांने ॥ तुम तो सुल्ये बुद्ध भरु से ॥ तो

जगजीवसमाने ॥ २७ ॥ ज्यों अल्पमे जीवचराच
र ॥ वीनुतपसे भवभर मे ॥ त्यों तुं मही बं सज्ञान
वहीतमे ॥ रये जीववीनुकरमे ॥ २८ ॥ उत्तमकर
मसकल जेतन्ये भर ॥ अहं बं ससे त्यागे ॥ मधुम
करमकरत नही डरहो ॥ जबसे रह्ये अभागे ॥ २
९ ॥ तबसे जेतन्ये ज्ञानी सकल भर ॥ असमी बं
सकहावे ॥ नीजपती परमसकरता सरजंन
सुपनंतर नही पावे ॥ ३० ॥ ज्ञानी की गत्य आप
न्ये आप लो ॥ नीज प्रातमके दरसी ॥ पण न लहे
करतार परमकु ॥ तीकैपों करी उधरसी ॥ ३१ ॥ जो
केहे सो आपनकु दरसे ॥ मोक्षपरं मपदपाई
जबतो आपो आपतरे सब ॥ कता सरनकु नजाई
३२ ॥ पुनी सतगुरुके कांम परे कहा ॥ आपो आप
पहरीमे ॥ देवनकु दीपक कया करही ॥ तीमरंन
सुरपरीमे ॥ ३३ ॥ जोकेहे सो अज्ञानमे टावंनरु
रुकीनाहंमसोई ॥ एकबं समे कुंतगुरुहे ॥ अण
केहंनकुहोई ॥ ३४ ॥ जो आपये अज्ञानहुतातो ॥ ज
वपीछेत्ये होई ॥ येसे अल्पगत्ते प्रातमसे ॥ काजन
होवतकोई ॥ ३५ ॥ तब जेतने कुलज्ञानी जेहनने
मोक्षप्रात्मसे मान्ये ॥ आपे आपहवीतपरं मश्वर
नीजकरतारंनजाने ॥ ३६ ॥ जबलगी आपन्येप

॥स.चं॥ रंमपतीकु॥ न्यावसहीतनहीखोजे॥ आतमल
 सलहेपणतीनसे॥ मीटेनभवजलमोजे॥ ३७॥
॥८१॥ भवजलमोजेजनममरंनडुखा॥ पतीवीनाकु
 नपतावे॥ आंत्यदेवनसेएहीदरदकी॥ कोहुन
 पीरमीटावे॥ ३८॥ जीनकीपीरनमीटेदेवंतसे
 जीवचीमेकोतरही॥ तीनसेसुरसरसगतीके
 पण॥ पतीवीनुकाजनसरही॥ ३९॥ तबसेसोक
 करहीनीजपतीकी॥ सुरसबनसेवंटी॥ न्याय
 सहीतघेवटकेसदनी॥ जिहीएकलतेहेंकंटी॥
 ४०॥ कंटकसोडुतीयेजमलीनको॥ दोवेंकरंन
 वीरोधु॥ तिहीसकलकेसीरपरसरजंनजिही
 अद्वैतअरोधु॥ ४१॥ प्रोकवंटीककेदेवसकल
 सब॥ अवध्यकालजेहीजाई॥ त्रीगुणसक्तजेरु
 पुरससहीतईत॥ आयलहीतपरलाई॥ ४२॥
 अवध्यकालपरलेकेजेहीपद॥ सोनहीकताक
 हाई॥ नीजपतीअंमररहायवीनाफेरी॥ रचना
 कुनरचाई॥ ४३॥ कोउकसीघांतेसदाकालभव
 जीनकेनासनहोई॥ तीकरतारपुनीक्याक
 रही॥ अंतवीनाकीनुकोई॥ ४४॥ एहीपरकारके
 होतोसुनहो॥ जीनकेन्यावलखावु॥ आयअंत
 मध्यकीगुंमगतीयो॥ सबवीधीसमजपरखावु

४५॥ आद्य कहो सब यंन की उत्पत्त ॥ मध्यमे
 सकल पसारा ॥ अंत कहो उत्पत्त की अवधी
 बीन एक सरजंन हारा ॥ ४६॥ सो तो तुं मही स
 कर कहत हो ॥ आद्य अंत मध सोई ॥ जो जग उ
 तपत नासन होय तो ॥ आद्य अंत की तुकोई ॥ ४
 ७॥ ओ क देखत तुं महा लने नसे ॥ ध्रुव सुसमके
 तं नही ॥ जे ही जीत की अवधी परमां नही ॥ बी
 न सी जाय सब जंन ही ॥ ४८॥ यावर की यावर
 संम सरजीत ॥ जंगम की जंम जे ही ॥ तीन की आ
 द्य सकल अचराचरा ॥ को हुंन अंम रस दे ही ॥ ४९
 मरत लोक मे की टमरे तो ॥ हये हस्ती मरजाई
 देवलोक उरघंण अलपीतसे ॥ चंद्र सुरपणजा
 ई ॥ ५०॥ एही दोहन की आद्य सही तं गुंन ॥ सक
 पुरस परलाई ॥ जब तो आद्य अंत उतई तमे ॥ पी
 छे कुन रह आई ॥ ५१॥ जदपी रहत नही को उ उत
 ई तमे ॥ हवीत सकल सब नासा ॥ रहे एक कर
 तार सनातंन ॥ पुंन ही सुंन्य अवी कासा ॥ ५२॥
 इत वीला सरहे जेत न्ये दीन ॥ कलपो कलप ज
 गंन ही ॥ तित न्ये भर अवी न्या सस करता ॥ रहे
 अके लग गंन ही ॥ ५३॥ तार पी छे फेरी कर ही स
 करता ॥ उर रचना के भाव ॥ पुरुस आद्य ओर

स. चं.

॥८२

सकीसहीतगुन॥ उपजावत सबकावु॥ ५४॥
एहीवीधीसेउत्तपतपरलायत॥ पुनीपुनीफेर
समरता॥ आयअंतमध्यअचलअनादीक॥
रहेसोबजेसकरता॥ ५५॥ अबदेखोनीजनेन
न्यायसे। कोहोकुनअचलरहाई॥ बंझावीसु
नमाहेससकीमो। पुरससहीतपरलाई॥ ५६॥
जबतोरहेअकेलसकरता॥ सेहेजसुंत्यसे
सोईकीटयतंगआयअजभवमो। जीनुअ
ससबकोई॥ ५७॥ इतीश्रीसक्रतचंतामणीरं
थेत्रधाप्रकारअंसलसुदेखावंतकीअंग॥ १२॥
त्रधाप्रकारअंसउतपंनकी॥ जीनकीगतीतज
नावु। जीवसांमांत्यवीसेसपरंमपुनी। लघुद
रघदरसावु॥ १॥ जेहीसांमांत्यअंसअचराचर
अलपगान्येअघसेती॥ वीसेसईसअवतारअ
घमो॥ धरमअनीतहन्येती॥ २॥ परमवीसेस
परमपतीकेनीज। हकमीहालहजुरा। कल्प
कल्पजुगमांहीपगवत। देखेनवीश्वसफुरा
अभोमंडलभवेभोवंनआयके। दृष्टपसारप
रमकी॥ जेहीजीनुईष्टउपासनकीनीज। नर
णीतसकलधरमकी॥ ४॥ मोरुतेहीधरमसी
धांतसकलके। न्यावसहीतलखेदेखी। वीन

पनहीथपही॥जीनकुरखेउवेर
 प॥थपककरतारसनातंन॥आद्यअंतम
 ध्यसोई॥उतपतपरलेपुनीजेहनके॥अवध
 कालनहीकोई॥६॥अवध्यकालबीतरहेअर
 डीत॥सामथसोईकहावे॥कलपकलपपरं
 जंतपायपुनी॥नवीननवीनउपजावे॥७॥या
 सेकोहनहीनीजकरता॥एकपतीबीनुइजे
 उतपतपरलेतेहीजेहनसे॥अगंमनीगंमस
 बबुके॥८॥एहीवीधीमायसहीतनरणीतके
 सोनीजअंसपरंमही॥कलपकलपअवनी
 परआवत॥केहनक्रतामरमही॥९॥सोहीम
 रंमटहंकारंनकीऊग॥रहहीकलपपरंजंतु
 जदपीजायवीसरंनकरतानीज॥तदपीआय
 धरंतंतु॥१०॥एणफुरमायलपरंमपुरसके॥
 हुकमेकरहीपीयांन॥एहीपरकारंनकलप
 कलपमे॥परमअंशआईजाना॥११॥ओरस
 कलसबजुगतजुगतमें॥वीसेसअंसवीचर
 ही॥तेहीसबनीजकरतारंनकीगत॥सकेन
 हीभवकरही॥१२॥क्योंनसकेकरीतवकरता
 गत्य॥कहतसुनोमेंउनकी॥नीजकरतारय
 कासबुलजे॥तांहालगजांएणजेहनकी॥१३॥

स. चं। सुनकादीकसुखदेवकपीलदत। ओरुभवता
 रसमेती। अद्वैतबुद्धसिधांतसकलके। नीगं
 ॥८३॥ मसहीतकीयेनेती। १५॥ न्येतीन्येतीसोहीन
 हीनलहतहंम। अथाहकेउचरंतकी। तोकर
 तारपरमनीजकेजेही। कौंकरीलहेसदंतकी
 १५॥ पुनहीएकअद्वैतकहणमे। ईश्वरपणको
 हारहीये। जबतोजीवअचेतसकलसब। ती
 नकीसरभरभइये। १६॥ जोहोयजीवसकल
 सरभरही। तोकुणईसअदकाई। तीनकेजूप
 नकीजुगतैके। घोमोईअरथवताई। १७॥ पु
 नीसांमांनवीसेसवीनातो। आभवसरवस
 रीखे। नरकसरगकेडंडकेहनकु। कुंनराय
 कुनभीखे। १८॥ जदीपकहोजोपापपुंन्यसे। उं
 चनीचसबहोई। तबतोद्वैतभयेतंनतंनपोभी
 नभीनसबकोई। १९॥ बोहोरुकहोजोपुंन्यपा
 पकांहं। सुखंडुखमकीनुकोई। सोतोदेख
 तप्रगटनेंनसे। अगततहेसबसोई। २०॥ लख
 चोरासीजीवजंतही। अणनीआद्यतंनधारी
 रोमरोमरगडुखीतसकलसब। कोईकवीर
 लसुखकारी। २१॥ एकसुखीतएकदुखीतद
 रदके। घटेनहीअद्वैतमे। एकअंगकीपीर

सकलतेन ॥ दिखी परत जीतती तमे ॥ २३ ॥ राते
 ही परकारंन एक बंलके ॥ अंग सकल जो ही ई
 एक उची तते इखी त सकलके ॥ सुखी ते सुखी
 तसको ई ॥ २३ ॥ पण ते तो इति अखी लखलक
 मे ॥ इष्ट परत हेनां ही ॥ जीनके सुख इखजे ही उ
 गतत ॥ कीनके कीनुनकां ई ॥ २४ ॥ जब तु मेरे बो
 लन नरणी तमे ॥ न्यावल ग्यो नही एकी ॥ अही र
 ची जब से अवल गलौ ॥ करतारखे उवेकी ॥ २५ ॥
 आचार जजे ही भये अवत्य परा ॥ कोउकी तुखो
 जन करीये ॥ इरघट सब साधडाहापणके ची
 तकी चकीत उचरीये ॥ २६ ॥ ओरु व्याकरण वह
 वटवेदनके ॥ कहत देवकी भासा ॥ देस देसकी
 बांती समजकु ॥ करत सकल अभ्यासा ॥ २७ ॥
 वया करण सोई करण पवंनकी ॥ आपत्ये स्वा
 सपणवकी ॥ चुरचुरचतुरे उचरंकी ॥ इति भव
 के अरणवकी ॥ २८ ॥ भव सोई भवीत आयुषत्र
 ती गुंत ॥ सहीत सकल रजत जही ॥ एही दिवंनकी
 बांण बुणी तमे ॥ अदके कुण समजही ॥ २९ ॥ ज
 बये देव मनु सकी गतीयां ॥ अधीक नही कोउ
 कीनकी ॥ तत्व वीचारंतां सर भरही ॥ बोलीन
 मे भीत भीनकी ॥ ३० ॥ नांम रूप गुन सहीत पदा

॥स.चं॥

रथ॥तांहांल ग गत्य दोहनकी॥पणनीज करता
रहो अकल अज॥जांहांल ग जांण पन कुनकी॥३१॥

॥८४॥

एही परकार अजांण अखील कुल॥नीज करता
रगतीके॥सोवैपोल हही न्यावन रणीत मम॥अ

वी गत्य अकल अतीके॥३२॥पथंम वेद उचरंन
चतुरानन॥जीननेतीगंमपोकारे॥तीनका

द्य सकल इति भवको अचार जही वचारे॥३३॥
सुखे बुंला भवर चतारंन॥नीज करता र आप

नके॥तो अचार ज कुन गनीत मे॥अज उचरं
नथापनके॥३४॥अज उचरंन सोईनी गमनी

राक्रण॥ओरु व्याक्रण वरणेवु॥तीनकी गत्य
मत्य आय अंत मध्य॥तुम कु सकल कहोवु॥

३५॥तीनमेको हो तुम क्रता आयकी॥गत्यको
हनमे देखी॥वेद पुरांन सास्त्र के व्यगता॥खीये

सकल सब पेखी॥३६॥पुरस आय प्रकृती गुण
सहीतंम॥यांहांल ग सब संसारी॥क्रता आय

कुबुकसकेकेपै॥एसब वीसे वीहारी॥३७॥परं
मपरातीनकी एक एकसे॥देव मनुस अबल

गही॥वीनुव ईरा गज्ञानकी गतीयां॥अंध सक
ल सब जगही॥३८॥अंधे अंध अनाय प्रायके

एभव भर मभुलांने॥जबसे ते अबल गल्योको॥

उने नीजकरतारनजांन्ये ॥३५॥ नीजकरतार
लहनकीजेहीगंस ॥ परंमगुरुबीननांही ॥ वीति
कलयजायभवआवत ॥ बोहोरुहतरखुदजांही
४० ॥ जेहीखुदकेनीजअरसपरसके ॥ परमअं
सपरमेती ॥ तेहीलहतहेगतीअलखकी ॥ ओ
रसबनकीनेती ॥ ४१ ॥ सोहीपरमनीजअंर
अलखके ॥ नवीनचीनकाहालावे ॥ पंचतत्वके
सरीरसबनकु ॥ कवनलक्षलखपावे ॥ ४२ ॥ सु
नोतेहनकेकरकलसकी ॥ परंमअंसकेजेही
जीनकीगतीअथाहयाहवीन ॥ कतालखन
कीतेही ॥ ४३ ॥ सकलसीधंतन्यायकेनरणीत
जीनुअंतअविलोकी ॥ नीजकरतारसारवीनु
सबही ॥ देवनहारउवेकी ॥ ४४ ॥ म्होबतररेवेनकी
बुकोहनकी ॥ बंधादीकभवभरकी ॥ जीनकीपो
हेचनपरमन्येतीपदा ॥ कताचीनसरभरकी ॥ ४
५ ॥ तेहीसबनकुनीएकरंनजेही ॥ कतात्याबन
रणावे ॥ जीनकीपेजनपरेपीछोरी ॥ परंमअंस
तेहीकाहावे ॥ ४६ ॥ पुनीसबनप्राचीनपक्षकी ॥
भीनभीनकरताई ॥ माहाउग्रअनुभवगतीगे
मसो ॥ जीनुजंसदेतदेखाई ॥ ४७ ॥ आपआपन्ये
सीधंतसबनकु ॥ न्यायसहीतअरथाई ॥ जेहीजी

॥स.चं॥

॥८५॥

नुमोक्षयदारथकेपद॥तेहीतीनुदेतयताई॥४८
एहीपरकारलखावंनजीनकुं॥आचारजउर
हृदकी॥तेहीसबनकीपारलहनलखा॥नीजक
रतारहारदकी॥४९॥जेहीहारदकरतारपरं
मके॥तुह्रनहीकोबुउनकी॥पोचसकेनहीग
तीजेहनकी॥परंमअंसबीनुकुनकी॥५०॥ओ
रसकलसबजीवजंतके॥पंचीकरणलहनके
जेहीपरकारक्रताररचेतंन॥तेहीपरकारकह
नके॥५१॥जोनलहेगत्यक्रताकरतकी॥तीकर
तारनबुजे॥तेहीअंससबअलगत्येगत्य॥आ
द्यअंत्यनवसुजे॥५२॥आद्यअंतमध्यकेअनुभ
वकी॥परमअंसयेहेचाने॥नीजकरतारहजुरी
हुकंमके॥सोकोपौहीयअयांने॥५३॥कहतसुघं
मअनुभवकीगतीयां॥सुनोसकलसबजंतही
कारंनसोकारजमेदरसीत॥कारजसेकारंन
ही॥५४॥मध्यसकलसबव्रततदेखीतव॥पु
टनेंतकेआगु॥वीवीधीभात्यवीचरंनअनुराग
त॥पागीतअलपउमागु॥५५॥अलपउमागमां
हीसबवरतत॥बुंसाकीटपुजंतु॥जेहीजीनके
आयुसअवधीअग॥पुरस्यसकील्यौंअंतु॥५६॥
जेतमेभरउमंगअखीलकुल॥अवध्यकालहो

यमंग॥ नीजकरतारवीनाअरहीतके॥ तिही
 सबअलपउमंगु॥ ५७॥ अरहीतसोतनुनांमरु
 पगुंन॥ दिखीतभवीतहलासा॥ पुंपरधानआ
 घुअबलगस्यौ॥ अरहीतसकलविलासा॥ ५८॥
 अरहीतकेलखआद्यअंतमध्याकीनसकल
 वीस्तारा॥ यांहांल्योसबंनअनीतअलपगन्ये
 बीनुहुअंसकीरतारा॥ ५९॥ एतयेभरकीअर
 जपतीनकु॥ पतेलगतनहीकोई॥ उतंममध्यम
 करनीकरंनफल॥ भुगततहेसबसोई॥ ६०॥ सो
 भुगतंनमेअंसअखीलकुल॥ रह्येसकलवी
 लमाई॥ तिहीपणआपअचेतवेतहोई॥ अदबद
 सेअनुराई॥ ६१॥ कोहुंनआपनानीजआपनहो
 ई॥ क्रताआद्यनहीचीत्या॥ तबत्येसकलपदारथ
 क्रतके॥ ईश्वरीयेरंगभीन्या॥ ६२॥ ओरबुंसकेल
 सलहंनके॥ क्रतवईसल्यौंयागी॥ तिहीपणआप
 कसुंन्यसमोवडा॥ अकरतपदअनुरागी॥ ६३॥
 पथंमआपयेआपंनकोनीज॥ अनुभवकरे
 वीनाई॥ आंत्यअपरअनुभवडुसरंनये॥ क्रता
 लहतनहीताई॥ ६४॥ आपयेआपलहनकेम
 रमीत॥ परमीतवेदजीत्येह॥ करीतसुरतकुस
 केअगरंनसंम॥ सुनीयोडुसरदीत्येह॥ ६५॥ इति

स. चं.

॥८६॥

श्रीसकतचतामणार्थक्रताश्रमसंबोधन
 देखावंनकोश्रंग॥३३॥ पणयातोदीनकेदीनक
 रंतन। जीनजानोसरभरही॥ जीनुपरकासस
 कलतंनवीचरतं। सुरकेतोथीरथरही॥१॥ अ
 आपन्येकाआपसुरंतकी॥ देखोसचीतकला
 की॥ कहतकुचीकलक्रपावंतहोई॥ अतिअपरं
 मगत्यह्काकी॥२॥ जीनुपतीबीवचलीतपरमा
 त्मं॥ पुरससकीगुणसेतु॥ अंत्योअंत्यहोयअ
 रसपरस्ये। भवीतवसकलसचेतु॥३॥ गुणसे
 अंतसकरणईडीदश। पुनीरगअस्तअमीरव
 ही॥ रुडरोमओरुतुचापंचतत॥ सकलअंग
 नीरवसीखही॥४॥ नीजपतीबीवग्रहीतपरमा
 तम। जीनुततसुलटसोहंगा॥ तीनकीकीरणपु
 रसप्रकतीपर। प्रकतीमीलीओहंगा॥५॥ ओहं
 गसोहंगमेउलटपुलटहोई॥ कीन्येहप्रणवसजी
 वा। जीनकेभाससकलतंनव्यापक। रोमरोम
 रगजीवा॥६॥ ओरुनीजप्रणवसकलजडजी
 नसे। अहंगसहंगदोउन्यारे। स्वासउस्वासस
 बउचरावंन। जीनकेओईअसवारे॥७॥ वीलि
 असवारस्वासससोपतके। सीरपरहंगनबो
 ले। हंगवीनायहरेकप्रकारंन। बाबजजायअबो

ले ॥ ८ ॥ बीनुवा बजके सुस्क सवरसे ॥ अनुभव
 नहोय नवेरा ॥ तेसे डंड कुलाल वीना गसा ॥ फर
 तचा कज्यो फेरा ॥ ९ ॥ तबत्ये स्वासहंग वीनु सीर
 परा ॥ मरीत चरमवत पवंनां ॥ मरीत कला कब
 जे कलकी ज्यो ॥ त्यो दंम करत ही गवंनां ॥ १० ॥
 हंगसचे तहोत गती रबसे ॥ तेही आपन पुत्रो
 ई ॥ तेही आपन पुत्र हंग हंग मील ॥ कता हंग
 लहे सोई ॥ ११ ॥ कता हंग दी व्यषत्र सो हंग सीर
 अहंग हंग आपत्ये ही ॥ उभये हंग मीलीत हलम
 लरत्य ॥ उमंगे देह सबे ही ॥ १२ ॥ कीट पतंग आ
 घ अज भवस्यो ॥ जलथल जंत सबे की ॥ कही स
 बनकी छेक संकलना ॥ नीज करतार रचे की
 १३ ॥ जीनमे आपना आप हंग कु ॥ सावधान हो
 य सज ही ॥ अलग अनुपक्ष सदैत नसे ॥ कता
 हंग कु भज ही ॥ १४ ॥ तेही भजंत नीज परमपती
 कु ॥ अंगी कत होय सोई ॥ आप्तनां मजे ही से हे
 स्त्र आयज प ॥ खुद कु पुगेतं कोई ॥ १५ ॥ पुंगस
 के सोई हंगे हंग जप ॥ तेन लगे ज्यो रब ही ॥ आप्त
 वीजात ईडी अनुभवसे ॥ नीर रवसके नही कब
 ही ॥ १६ ॥ तेही हंग नीज करके करंन संमा ॥ चक्री
 डंडके त्याई ॥ क्रीयाका जलगस जीतसे हे स्त्रवत

स.चं. बोहोरुनरहेरखाई १७। स्वजीतसाजनीजस
 रूपसुरतकर ॥ गहीतहंगकेडंडा ॥ सोतोनीमस
 ॥ ८७ ॥ नीमसबीधरंतके ॥ आपनुआपतोअखंडा
 १८ ॥ सोहीअखंडसनातआपसे ॥ सुरतीभये
 त सचेता ॥ तेहीसुरसेभयेसजीवंत ॥ सकलसाज
 सबतेता ॥ १९ ॥ करतवीलासहासविवीधीवी
 ध ॥ जीनुपतीबिंबपत्तापु ॥ हवीतसमापमाप
 एहीसबके ॥ रहहीअमापहीआपु ॥ २० ॥ तेहीअ
 मापआपकेअनुभव ॥ सतगुरुलक्षलखावे ॥ वे
 होरुपरमपदपरमगुरुवीन ॥ कोहुमरमनही
 पावे ॥ २१ ॥ बीनुमरमनीजपरमपतीनकेआ
 पताआपसमेतु ॥ एहीजुगमकीजाणवीनाजं
 न ॥ भवकेजंतसखेतु ॥ २२ ॥ नहीनफेरकछुजं
 नजंतनमे ॥ क्रताआपवीनुपाई ॥ धरतवेसजे
 पुरसनासके ॥ पणअंतरपुरसाई ॥ २३ ॥ एहीप
 रकारसकलसबदरसंत ॥ उपमेकरतसराई
 पणअंतरकीलहहीआपगस ॥ नीजग्यंमक्रता
 वीनाई ॥ २४ ॥ जोनीजग्यंमनीजक्रतावीनायंन
 दरसपरेआपत्येहुं ॥ तदपीतायखुदगुरुपर
 मकी ॥ करहीखोजधरत्येहुं ॥ २५ ॥ गुरुपरमसे
 ईपरमक्रपालंन ॥ चुकनजुवेजीवंतकी ॥ पण

जेही तेही परकार सरनगत्य ॥ मये करही ग
 ततीनकी ॥ २६ ॥ हेकोई आरतवंतपतीनके
 बीछरनकरनमेलायु ॥ गुरुपरंमकुजाईमी
 लनसे ॥ एकनरखेअवायु ॥ २७ ॥ जबकोईआ
 ईमीलोतोमीलोअब ॥ गुरुपरंमकुताई ॥ नही
 तरतोभरमोभवमेभल ॥ घेवटदीयेसुनाई
 २८ ॥ इतीश्रीसकृतचंतामणीग्रंथेअलंकार
 ईश्वरीयेदेखावंनकोअंगः ॥ २९ ॥ बोहोरुसुतो
 आपत्येआपनकी ॥ तंनसेतरकजेहनकी ॥ ज्यो
 तेनेनमुकरमुखनीरखत ॥ एहीविधीअलग
 रहनकी ॥ ३० ॥ अलगरहनकीआपत्येआपकी
 आग्येदेहुदेखाई ॥ अबतोसुनोवेसवितपन
 की ॥ जीनुपरमप्रभुताई ॥ ३१ ॥ सजनहारनेस
 जेसकलकुल ॥ अलंकारजेहीतंनके ॥ सुव
 ससक्तीईश्वरपणजीनमे ॥ भीनभीनसबयं
 नके ॥ ३२ ॥ जेहीजेहनकेधरीततायतंनतेही
 तेहनकेज्ञानु ॥ पसुलहतनहीअहंगमानुमे
 नहीनमनुषपसुभानु ॥ ३३ ॥ एहीपरकारस
 कलतंनकेतता ॥ अलंकारवसहोई ॥ अवनी
 तेजअपपुनीतपवंननभ ॥ सहीतसकल
 सबकोई ॥ ३४ ॥ अंतसकरंनईडीदसकेरसते

स. च.

॥ ८८ ॥

हीपणमोहीततेहंनमे। आपआपत्पेहीसजाती
नमेसद करहीप्रीततेहीतीनमे॥ ६॥ रजतमसा
लीकआद्यसहीतघण। वृततदेखीतंनसंमही
राजंतमेराजंतवतउपजत। रंकमेरंकसंगंम
ही॥ ७॥ ओरपतंगकीदखगतंनमे। जीनमेजे
हीसमांतु। अधीकवेगनहीकरहीहंयगुंन
भवीतंतगतज्ञांतु॥ ८॥ सुरततीरंतओरुस
हीतज्ञांतगंम। अभीमानअहंकारु। करही
वीलोकसकलनीजतंनसंम। तेहीपणहवी
तपसारु॥ ९॥ आसात्रसाहरखसोखमद। त
दवततंनपरमांतु। जेहीजीनकीजातीजंम
तीनमे। करतकेलअभीरांतु॥ १०॥ सुमताल
जासरमसमरती। ओरववेकवीचारु। ते
हीपणतीनमेतंनपरमांणीक। उदवीतनही
अधीकारु॥ ११॥ नीराकारजेहीसबसुंनसु
त। उचसेतंतसरेखु। खचोरासीजीवजंत
की। आख्याभीनअलेखु॥ १२॥ जोरजवरतीज
हरदेहोमही। सोहीपणसरीरसमांण। अजा
नकरतसीघकीसमतल। सीघनअजासमां
ण॥ १३॥ पुनहीसकलतनुकेकारणनीज। प
णवजापजीनुसोई। दिवंनमेंदेवंनसंमवरत

त॥ मनुमे मनुख समोई ॥१४॥ ओरु अपके मछ
 कछ मघरा दीक ॥ मी डपोर ओरु संखु ॥ लेवत
 स्वास उस्वास उमर धरु भर मे रहत नी संखु ॥
 १५ ॥ तेही पणतीन के तंन मा पस अस ॥ वहत ही
 पुणव समीरु ॥ अतीनी रमाली कप मल पवंत
 से ॥ खीच सकत नही नीरु ॥१६॥ ओरु ईश्वरु
 वतार आद्य लो ॥ काज मुजवतंन धरीया ॥ जल
 मे मछ थल मे वे राहक ॥ तेही तंन के वश पुरी
 या ॥१७॥ वईद धनंतर वत सपतीन के ॥ धरो
 रघतंन जबही ॥ चतुर लसं वेदक के गत्यकी
 परही सुऊजवतवही ॥१८॥ एही विधी के तंन
 तरवत असके ॥ कारणकी ये क्रतारु ॥ अपनी
 अकल के मनुभवसे ॥ रचना रची अपारु
 १९ ॥ नीज पती परम अगं मगती ग्यंमसे ॥ की
 नसंच अनुसारा ॥ आलोचंन अखंकार अंतर
 खब ॥ अदर सअकल अपारा ॥२०॥ अगमगती
 करतार ई छत्ये ॥ अथं मपाटवी एह ॥ ओरु असते
 हुंसे आपमे ॥ एकसा नही जु देह ॥२१॥ जबतेही
 पाटनके पतकी अत ॥ राखत सब अधीकारु
 पंचतत्व ई डी गुंन अंतस ॥ ए सबकी ये पीधारु
 २२ ॥ तीनकी आद्य सकल जेतन्ये भर ॥ सुरत

सच ॥ नीरतअहंकार ॥ पीछेसकलपाटकेपतमेपो
 खिसवपरीवार ॥ २३ ॥ पीछेसकलतंतपोख
 नकी ॥ गतीसबंननेगाइ ॥ पणआलोचनसंच
 पतीनके ॥ जीनकीगतीनपाई ॥ २४ ॥ गतीपा
 यकौंपरंमतंतकी ॥ कृताकीनएकखाई ॥ बंल
 दीकभववीसुआद्यसुर ॥ जीनमेसकलसराई
 २५ ॥ पंचतत्वईडीगुनअंतस ॥ आतंसहीत
 समोह ॥ एतोसकलमांहीतंतनमे ॥ अलंका
 रभीनहोह ॥ २६ ॥ तेहीअलंकारनकेतंतसेअ
 लगअलगईश्वरीये ॥ धंसधंसनीजपतकीग
 सने ॥ पथंसआद्यकौंकरीये ॥ २७ ॥ अलंकारतं
 नकेअनुभवकीगतीनजांतकोई ॥ सुनोकहुं
 दृष्टांतकरीनके ॥ समसोसकलसकोई ॥ २८ ॥
 ज्यौंपरजापतकेउरअंतर ॥ आगंसलेतवीचा
 री ॥ नीखसीखसकलघडतघटभीतर ॥ तेही
 बनावतवाहारी ॥ २९ ॥ बाहरघटकेरूपरंगकुं
 देखीतधरीतसत्येह ॥ पणअंतरअलोचनके
 घटाइएपरतनहीकेह ॥ ३० ॥ आगंसअलोच
 अदृष्टवीभूतन ॥ कृताकीननीजगतके ॥ न
 येसकलतद्वेततेहीतीनमे ॥ अजीतसंच
 अधीपतके ॥ ३१ ॥ तेहीसंचवशअचरचराचर ॥

पुरस आद्यवीसतारु॥ सकेनही ओलंगीत
 यको॥ क्रताकरत अलंकारु॥ ३२॥ इतीश्रीस
 क्रतसंक्रंचेतामणीगंथे अंस अलेपसलेप
 सचीतदेखावंनको अंग १५॥ अबतीनमेनीज
 अंसपतीतके॥ अलगरहंनजेही भाती॥ व्या
 वसहीतनरणीतजीनकीगस॥ तीनकीसु
 नोवीजाती॥ १॥ ओरसकलसबतंतकहीत
 जेभयेवसीकवेहंनके॥ जडकेपखेसजात्य
 सकलको॥ मीलेसमोहदेहंनके॥ २॥ देहसमे
 हहवीतपरीपुरंन॥ करहीअंसपरवेशु॥ पर
 केकीयेअंसनमेअनुचीत॥ ज्योंत्येवसतवीदेशु
 ३॥ तीनमेकुंनसजातअंसके॥ सकलतंत
 जडजीतमे॥ दुसरसजातीकनहीनसाक्षीके॥
 क्रतावीनाकोउईतमे॥ ४॥ जबत्येसकलसजा
 तीजातमे॥ एकताहोयअनुरागी॥ क्रताअंस
 तीअकलअजातीक॥ आपेआपमजागी॥ ५॥ ति
 हीकेहुनमेकरेमेलायक॥ सजंनसजातवीना
 ई॥ ज्योंबनकेरखवारवरखमे॥ हवीतनहीए
 कताई॥ ६॥ पणारखतहेसुरतसबनकी॥ वर
 खवरखपातंमकी॥ तेसेहीअंसबरखतंन
 कीगत॥ तजेनमतआतंमकी॥ ७॥ आतंमसो

२॥१६॥चेतनगतसोईनीजचेतनता॥जीनु
 सचेतसभावतेनतजेपरकासपरमकु॥ज
 दीपकोयघटजावु॥१७॥ओरअंगमयंमनीग
 मगतीनकी॥जांएपुनहोयजोतदपी॥पणंचेत
 नताचलीतनहीकीता॥आपनुआपकोकदपी
 १८॥पुनहीजनीतमसरीतमहीवरतत॥जे
 हीअज्ञानसमेतु॥भुतपीचासजसअहीकेतन
 नीतकेकहुसहेतु॥१९॥भयेसकलअवगतग
 तकेतन॥एसबवीकलवीलाखे॥परतनमेप
 रवेशकरीतईत॥गतीपीछमकीदाखे॥२०॥अ
 तीसचेतमनुसतनकीगत॥खेईकरवसेजो
 तनही॥योरेकदीनतेहीरहेसमरती॥पीछेभ
 वीतअमनही॥२१॥अमनभयेअलंकारनकी
 गत॥होयईडीअंतअकु॥ओरसकलजडजात
 सजातीक॥हवीततायतेहीतसकु॥२२॥पु
 नीपसंगकीटपसुखगही॥वसतअसजेहीते
 नही॥तेहीनकरेपरवेशमनुसमे॥नीजमेन
 हीउचरंनही॥२३॥तोतीनकेअंतरकेगतकी
 कोहोकोकरीखुंनपावे॥जेहीजीनकीसमज
 णहोयजीनमे॥मांहीकीमांहीमुरजावे॥२४॥
 जेहीवीसेशअसअवतारीक॥ज्ञानध्यानंगस

स.क्र.

६१

सेता। वीचरंतोजीनुसकलजांहांनमे। कबहुं
 नहोयअचेता॥२५॥ व्याघ्रवेराहकमअमघकेतं
 न। जीतमेकीयेप्रवेसु। करीतकाजजेहीनीजम
 तलबके। भवीतनहीगतवेसु॥२६॥ एहीसांमांन
 वीसेसअंसकी। फरकभेदभवसेती॥ वीसेसकु
 नहीअगपअनादीक। संमकुसदाअचेती॥२७॥
 तदपीतायसांमांनअंसकु। मीलनाअंसविसे
 सु॥ तेहीलखावेक्रताआघकु। करीपरमउपदेसु
 २८॥ ओरुआपन्येतंनसेतंनदेखीत। तीनसेन
 रमनलाई। पणअंतरकेअंसवीसेसए। जीनकी
 अकलकलाई॥२९॥ वीसेसओरुसांमांनअंस
 की। अलगईसतासोई। पणजडतंतसजातीनसे
 गत। अलगअजातीकदोई॥३०॥ क्रताअंसकीअ
 लगरहंतकी। कहीहुतीतंतनसे। सोहीसकल
 वीधीकहीसुनाईत॥ समऊषेकअंतनसे॥३१॥
 अंतसमऊकीएहीसमऊसद। क्रताअंसआप
 न्येही। बोहोरक्रतारकरतकेकारंन। अंतरगत
 केएही॥३२॥ अबजेहीसुनोवीसेसअंसकी। पु
 नीसांमांनसमेतु। एकहीखांतपांतदोहनको
 वसतसजातसखेतु॥३३॥ अकखांतओरुखेत
 वसनसे। संमकरअंसतकोई। धमयंतकेईख

रीयंनकीगत। कहतसुनोअवसोई। ३४। एकसु
 जातसकसघटकेमही। पेरकपणवसमीर। जैसे
 हीअंसवीसेसतुंनगस्य। तैसेहीस्वरंनसहीर
 ३५। ज्योअपकेअनुकरसनसेईत। सकलपदार
 यसोई। लखचौरासीजीवजंततंतन। एकसरीखं
 नकोई। ३६। जेहीजीनकेतंतनमेतंतनसंमअपभ
 वीतवभीनसवाडु। येसेहीपणवएकअपवतसे
 अंसअलगप्रतीयाडु। ३७। एकनीरसेएकन
 हीज्यो। वनसपतीनकीजाती। पणवएकसेए
 कनहीत्यो। अंसवीसेसवीजाती। ३८। जबत्येप
 णवसजाततंतकी। खानपानवतसोई। तीनते
 अंसविजातवीलसण। एकनहीकीनुकोई। ३९।
 तंतसजातीकपणवसहीतरंत। अंसअजातअ
 मीरु। तेनहवेजडतंतसमीवड। चीकटमीलेन
 हीनीरु। ४०। एहीपरकारंतअंसअलेपनतं
 नमेथकोवीतरही। लागसकेएकअग्यनेहनकु
 तदीपतायभवकरही। ४१। अग्यसजातअंससे
 उदभव। आपनावीसरपणानु। ज्योत्येभोजनक
 रीतआपनीज। सुलीतवदीवसघणानु। ४२।
 थोरेकदीनकीभुगतमांतकी। सुऊनपरेसुघम
 से। तोकेपोरहेसुजाणआपनकी। कोटीकभये

सचं । जुगमसे ॥ ४३ ॥ एहीपरकाररूपे सअलपगमे बी
 छरंतहुयेक्रतारु ॥ तवसेतेअवलगत्यौंजीनकु
 ॥ ४२ ॥ कहीजुगभयेअपासु ॥ ४४ ॥ एहीअज्ञानकीनअ
 सनके ॥ आपोआपहवीनके ॥ वारकपेरकनही
 नतायके ॥ कहदृष्टांतजेहीनके ॥ ४५ ॥ ज्योतेष
 जनकरीतनेनकु ॥ आपत्येउपचरमसे ॥ आप
 षजनअपकेउतपंतसे ॥ कार्त्तिसुरपरमसे ॥
 ४६ ॥ कोउनईतकेकरीततायकु ॥ कीलमीसनी
 रनीराले ॥ जितनेभरमलअवनीसहीतके ॥ जीन
 केभईतसेवाले ॥ ४७ ॥ अज्ञीषपायतअज्ञीस्वारव
 से ॥ पुनहीतयोम्यभखनसे ॥ अरकषपातआअ
 अनुकरमीत ॥ उतपतआपतपनसे ॥ ४८ ॥ कलके
 बीजषपीतछलकायंन ॥ तिहीपणनीजनीरमी
 तके ॥ धातनकुज्योकाटकसायत ॥ उतपनहोत
 सवीतके ॥ ४९ ॥ नेननीरओरुअज्ञीअरककु
 बीजगधातसमेतु ॥ आवणभयेसकलएतनेकु
 नीजत्येनीमजसखेतु ॥ ५० ॥ एहीपरकाररूपे
 त्येउतपंत ॥ अग्यअसाधअमस्तु ॥ ओरसेनहीन
 आपरिषतत ॥ वारुवीकनहीनीरस्तु ॥ ५१ ॥ धातभो
 म्यसेबीजवरखसुत ॥ रवीतपमाहाद्यअगनके ॥
 ओरअगनअलपगमसुरत्ये ॥ सहीतनीरजेही

धनके ॥ ५२ ॥ पुनहीनेननीजअंसअरकके ॥ चरु
 गमकेजेही ॥ देखेनकुजेहीसकलपदारथ ॥ अ
 एनीआयतंततेही ॥ ५३ ॥ निनतीरअलपगसअ
 गनल्यौं ॥ सुरत्येधीनसहाई ॥ तीनमेतीमरनुहं
 तातेजमे ॥ इतसेलगीसकाई ॥ ५४ ॥ आभ्रनही
 अज्ञहीमाहायमे ॥ अवन्मनकाटकटाई ॥ वृक्षम
 हीछलकायनहीतक्पा ॥ एतीमभीइतिसेपटपा
 ई ॥ ५५ ॥ एखटआवीतहुयेजदीपसे ॥ नीजपदभी
 नभईनये ॥ नहीतरतोमाहातत्वमाहायमे ॥ अ
 लगवीनामलकीनये ॥ ५६ ॥ एखटकेदृष्टांतकही
 तजे ॥ सीधांतकाजअरथकु ॥ न्यायसहीतअनवे
 ईअरथवीन ॥ कुनकजकथेवरथकु ॥ ५७ ॥ पेसेही
 अंसअचेतभईतभव ॥ परीधीनपरमपतीनसे
 आपोआपहवीतनीजत्येअग्य ॥ लगीतनहीको
 उकीनसे ॥ ५८ ॥ तोयकाईओरुखारखअगंन्यकी
 अरकअभ्रजेहीछाई ॥ एकहीपवलयपवंनपर
 मीतसे ॥ जीनकुदेतउडाई ॥ ५९ ॥ बीजगकेछ
 लकाजंगमजंन ॥ तीनकुदेतबीडारी ॥ ल्यौंधाते
 नपरकेसकलीग ॥ खेवतकाटसमारी ॥ ६०
 पुनीअपनेकेनेनचरमकु ॥ जाग्रतदेतजगाई
 सवनसबकीटेरसुनाईत ॥ ततकीनेंदमगाई

स. चं.

॥ ६३ ॥

६१। एसेहीअंसअष्टाजंनअगकु। परमगुरुप
 रीहारे। तेसेहीपरउपगारकरनपन। तंतमंत
 कपहुंवारे। ६२। इतिश्रीसक्रतचंतामणीगंथेबु
 हवैरागदेश्वावंनकोअंगः प्रारंभतेः॥ १६। जोते
 नमंतकुवारीधरेतो॥ गुरुपरमपतीआईजद
 पीरीऊपरेतोपरमपदादेनतुरतदरसाई॥ १७। तेही
 माटेगुरुसंतसरंनबीनु। कोहुमोक्षनहीपाई।
 आघअंतमध्यकीगंगगत्यकु। सतगुरुदेतदे
 खाई॥ १८। आघअंतदेखीतसेहोवत। दीवनेन
 डुरहीतके। कछुनरहततायअनपेरवीत। क्रता
 करतउतईतके॥ १९। जोनीजक्रताकरतदरसी
 तके। अनुभवहवीतसकलही। तबत्येसुरत
 अंसकीभवीतव। आरतवंतवीकलही॥ २०। तप
 ततापबुहे। नकीभगीयां। अहरनीसअंतरही
 आरेहायकोईमुजेमेलावे। खुदकुखरेमीतरही॥
 २१। अहोतायकीखोजखलकमे। करहुजायके
 कीतये। अखीलअंसकरतारनकीगत। अर
 सपरसहोयजीतये॥ २२। तेहीपुरसकीखबर
 करंनपरा। तंनखुरखानकरेह। नदपीतोहोयउ
 ररहेवीलाखा। अबकीतकायधरेह॥ २३। जोकर
 हुआरतअरपंतही। पुरससरंनकादेह। ओर

अंसतो सुरत समरपु ॥ कतामीलन कुन केह
 ॥ तदपी हुंस संदेस कहं न पर ॥ रही अधर देव
 नकी ॥ अनी नहवीत अस्तुत करीत तवा ॥ कछु न
 बनी सेवं नकी ॥ १० ॥ तब ल्ये तेही संदेस करं न जं
 न ॥ रीजनी वाज करेहु ॥ तोती नके परता पपुनी
 तसे ॥ नी जगुरु मेहे रधरेहु ॥ १० ॥ धरही मेहे रगु
 रूपर मपुरे सरा ॥ करही साहाय करु एपेशु ॥ तो
 खुदघरकी खबर करं नसे ॥ अंतर रखे नरे सु
 ११ ॥ तेही खुदघरकी खबर सुनी तसे ॥ सुरतीने
 सहलासे ॥ कवीमीलु करतार करं न मम ॥ अ
 ती अकुल ई होय तासे ॥ १२ ॥ रिं नदी वसत स
 खान पांनकी ॥ सुधु नरहे सलुणी ॥ ओर सक
 ल संसार सर्व परा ॥ आसक होय अलुणी ॥ १३ ॥
 जांही जांही दृष्ट परत जीतती तमे ॥ सकल साज
 अखील तमे ॥ तेही तेही सरपवीषु आग्रन सं
 मा देखी भजत भये भीतमे ॥ १४ ॥ अ वनी ओम
 बंलांड भरतमे ॥ कही न सुरती वीलंबे ॥ ती नलो
 क जीनु लगत तएवत ॥ वीचरत वीकल अचं
 बे ॥ १५ ॥ ज्यौं ल्ये मी नती रबीनु तलपत ॥ धरही
 ग्रथ पये पांतु ॥ एक तोय बीनु ब्राह्म ब्राह्मंत ॥ कर
 तन ही अवीखांतु ॥ १६ ॥ एही परकार तपतंत

॥ स. चं.

॥ ६४

मंनजन ॥ नीजपतीपरमवीजोगु ॥ पलकपल
कजीनकुजुगकेसंस ॥ लगतगरलभवभोगु
१७ ॥ आसापासरहीतनेकंचन ॥ तरकत्याग
तंनसेती ॥ नांमरुपगुणदृष्टपदारथ ॥ देखतहे
तअचेती ॥ १८ ॥ कछुनराखतकरतपासकी ॥ व
रमेअएअनीतकी ॥ एकअखंडीतवरतीवीले
कीत ॥ कताकारनपदजीतकी ॥ १९ ॥ जंपनही
जीनुतदीपतायतंन ॥ मंनकीसुजवसमेतु ॥ आ
लोकअोरुपरलोकप्रीततज ॥ करतलगेज्योपे
हेतु ॥ २० ॥ ल्योवईरागपेहेतवेहेसहीतंम ॥ उअ
पेलगेअंकुरमे ॥ तवत्येपजलीतभयेउरंतर
ज्योत्येअगत्यकपुरमे ॥ २१ ॥ तेक्योरखेजलत
तंनमंनकु ॥ गुणईडीअंतसही ॥ वंचीतनही
कोयलाकीलमीस ॥ अगतकपुरत्योअसही
२२ ॥ एहीवीधीभस्महीततंनकेतत ॥ वेहेसुर
तवीनअंसु ॥ देखनमात्ररहतबुतबाबलक
रीकेकवीरअकंशु ॥ २३ ॥ हलनचलनजीन
केजुगजनीतत ॥ भानवीनाभरमीतके ॥ ज्यो
गंडुरकीखानपांनरत ॥ ल्योपतीकेसनमीत
के ॥ २४ ॥ येसेहीतीवरागरगरगतंन ॥ उअ
पुंत्यजीनुआवे ॥ कोटीअनंततंतमेएहीतंन

तदपीप्रमाणपसावे ॥ २५ ॥ जोरकोईनासतर
 एतंनकेपत ॥ सुयेवीनहीपरीषाक ॥ पुनही
 मातवीनुतातदोहनके ॥ जेहीविधीरोतउदाक
 र ॥ तिहीविधीकेवैराणविलखतंन ॥ भवीतवे
 रागीतजंनही ॥ क्रताकारंनकलपीतजीनके
 चीत ॥ ज्योसेत्रीयातपनही ॥ २७ ॥ अलपअंर
 आयुसपतीकेकज ॥ करतनासकलपंतु ॥ ती
 खुदखलकजांहांनपतीकारंन ॥ क्योंनवारी
 धरेतंतु ॥ २८ ॥ एकतंतकीकुनचलायत ॥ क्र
 तामीलनबदलेकु ॥ जोकोईआयलखाउकहं
 नपर ॥ वारुहुतंतअनेकु ॥ २९ ॥ तंतअनेकदे
 तकांहांपावत ॥ तदीपतोहोयडरलभही ॥ सी
 वसुनकादीकआद्यकरीततप ॥ क्रताकाजल
 गअबही ॥ ३० ॥ काहाकहुआरत्यजेहनकीसु
 रतअचलधुडथीती ॥ अथाहीनतहीहुयेअबी
 तल्यो ॥ जुगतकोटीगयेवीती ॥ ३१ ॥ धंन्यधंन्य
 नीजपतीपरमपर ॥ यावीधीकरेकसंनहीते
 तीनकेतंतनअचलअनादीक ॥ सकेनकालड
 सनही ॥ ३२ ॥ देखुहुएहीनीजपतीरीकावंन ॥ स
 होकएकेहीवीध्यही ॥ अंसुदंनकेलासनके
 सुख ॥ तजीतदीअमाहारीध्यही ॥ ३३ ॥ तोआजु

स. चं.

॥१५॥

गकेभक्तभरंनकी॥ कुंनगनीतलेखनमेती
नकीसरभरकरीततायको॥ इतिकेभवभेख
नमे॥३३॥ पणनीजकरतापरमक्रपालेनजु
गकेधरमवीचारी॥ अल्पआयुसपरमाणु
रतसे॥ तुकलेलेतनीवारी॥३५॥ येसेपरमद
यालप्रभुपर॥ क्यौंखुरवांननहोई॥ कोटीजुग
नतपतुल्यतनीकनतु॥ जवीतारतहेतोई॥३६॥
कुणकुमततुजकरमतणीसग॥ तिहीकरतारं
नजांने॥ हायहायहयेहरखनउपजे॥ सबजु
गभरमभुलांने॥३७॥ ज्यौबालकमातनबीछ
रंनसे॥ रोवतसासभरीनके॥ अतीआरत्यके
रुदनदेखीतव॥ आईमीलतफेरीयंनके॥३८॥
तिहीपरकारंनक्यौंनरोततुज॥ परममातुबी
छरंनसे॥ प्रमीतपीतउतकष्टरुदनसे॥ आई
मीलतहरीजंनसे॥३९॥ जितन्येभररधरकस
प्रमाणीक॥ दांसयगेतेहीतीनके॥ हीरामांण
करतंनआद्यलौं॥ भीनभीनजेहीजीनके॥४०॥
पणपारसपदरकममाहादरध॥ मोलतोयन
हीआवे॥ ताईपरंतुपरमचंतमणी॥ कोहोक्यौं
करीकीतपावे॥४१॥ तिसेहीअंतसकरणईडी
गुंन॥ एसबदांमकहाई॥ हीरामांणकरतंन

आद्यसंम॥पंचीकरणसेयाई॥४२॥पुनीपार
 सपदआपतुआपनीज॥पंचीकरणपरंतुती
 नकीपरतीजक्रताचंतमणी॥सकलत्येती
 परअंतु॥४३॥आपतुआपपारसपदसुकल
 पावंनअतीअगंमही॥तोकरतानीजपरंम
 चंत्यामणी॥पावतकुनसगमही॥४४॥अल
 परकमनहीमीलेदांमवीन॥देतकीमतपरमां
 रो॥तोकरतारसमीक्यातुजने॥कीत्येहुगुरु
 सरांरो॥४५॥गुरुसरंनतंनमंनधंन्यअरपंत
 कीनानहीजरुरी॥तोकरतारसकलकेका
 रंनपावंनअतीबडदुरी॥४६॥ओरकरतकार
 जस्वारथके॥तंनमंनसुरतपरोई॥पणकरता
 रपक्षकेसाधेनकरतनहीकितुकोई॥४७॥जब
 त्येआसकरोतीजपदकी॥गुरुसीकेवीनतव
 ही॥अएरचीजबत्येअबलगयौं॥क्रतामीले
 कीतुकबही॥४८॥इतीश्रीसकतचंतामणीरंथे
 परमवीसेसगुरुक्रतामीलनवेहेदेखावंन
 कोअंगपारंभः॥१७॥गुरुपरमजेहीअंसविसे
 संन॥सरीरस्रएधरीआवे॥तेहीअगमगतला
 यअगमसे॥क्रतात्यावलखवावे॥१॥ओरसक
 लगुरुअवन्यवेसधर॥क्रताअंससांसांनु॥आ

स-च ॥ पनुआपतीजपतीपरमकु ॥ जीनकुनहीनज्ञी
 नु ॥ १ ॥ ज्ञानवीनातोपंचतत्वतंन ॥ सरस्वास्
 ॥ २ ॥ कलजेहनमे ॥ बोहोरतंततेहीसहीतसमोव
 डा ॥ अदकेकुंनतेहंनमे ॥ ३ ॥ पुनीभस्मजेहीष्यप
 तीलकसे ॥ जगत्येभीनकहावे ॥ तेहीसकर
 उपत्येउपचारंन ॥ वगपराठावबनावे ॥ ४ ॥ तिही
 उगनकेतीलकषापसे ॥ वगकेमोक्षनकोई
 तोतीनकेसेवकहरीजंनकी ॥ कोहोकेपोंकरी
 गत्यहोई ॥ ५ ॥ तंतइंडीगुंनजीवजंतसंम ॥ जी
 नमेगुरुकुनकेत ॥ तीलकषापअणबोलअसे
 तंन ॥ कुनकरहीउपदेह ॥ ६ ॥ एहीउभयेउपदे
 सनलायक ॥ पुनहीअसबीनज्ञानु ॥ ज्ञानवी
 नातोगुरुनेसीसकुंन ॥ सरस्वेसरस्वसमानु
 ॥ ७ ॥ तबत्येपरमवीसेसपरमगुरु ॥ सरंततेह
 नकेजाई ॥ तोकरतारपरमपतकीगत्य ॥ स
 कलजेहनसेपाई ॥ ८ ॥ जोपावहीकरतागत्य
 जीनसे ॥ तुरतदीयेतंनमंनकु ॥ वीलमनक
 रीतभरीतआरतसे ॥ एसेहीपरमरथीनकु ॥ ९ ॥
 टुकटुकहोईगयेतेहनकेवचनउपरतंनवारी
 तोगुरुपरंमसकलजेतत्येभश ॥ लेवतघुनानी
 वारी ॥ १० ॥ जबकुलघुनानीवाजकरीतमुसुउ

रणीतल्लसभवेतु॥जेसेहीनीजपतीकीयेन्ना
 घधरातेसेहीभयेनकेतु॥११॥भयेनकेतल्लस
 अलुकरमीत॥मरमीतपरमउदारु॥तेही
 सरूपसुधअनुभवसे॥करहीपोकारक्रताक
 १२॥अतीआतुरताअकलपेतउर॥भयेविष
 मवेहेवंतु॥अपवीषरंनमेननतलपीतवत
 योरंतहवेअतंतु॥१३॥सुनेपोकारजदीपक
 रतानीज॥तदीपअंसउरलेहा॥अहोधंनजं
 नआईमीयेमुज॥कहहीक्रताधरत्येह॥१४॥
 धरहीनेहकरतारपुरंजन॥मीलहीकंवउरला
 ई॥कोटीकलपवीषरंनतंनकेतप॥स्वांतीकरी
 तसहाई॥१५॥भवीतस्वांतीजवसकलतपत
 की॥ईथेतारहीनताई॥नीजपतीपरमधाम
 आपनेमे॥रारवीतअटलसदाई॥१६॥परमधाम
 मपतीपाससुखदकी॥एमुखसकुनवरनी
 भुगतमांनजेहीकरीतलहतते॥धंत्यजेहनकी
 करनी॥१७॥क्रताधामपरमाणसुखदसद्
 भुगततल्लसअथाह॥जेतीतकेजीतकुतीत
 कीगत॥इतकेलखेनकाह॥१८॥एहीपरकार
 सधामसहावत॥क्रताल्लसतंनभीता॥रह
 हीतायलगपरमकारंनतंन॥भवीतल्लसम

स.चं.

२७

हीलीना ॥१६॥ ओर असभव भ्रमीतवकेतेन
हवीत अवधतेही कालु ॥ सरवसमेदलेत आ
पत्नेमे ॥ अंतकाल प्रतीयालु ॥२०॥ असवीला
सरेहेतेतनेभर ॥ अलखअकेलरहाई बोही
रुचचेजो कृतास्रएकु ॥ असनवीनउपजाई
२१॥ आगल्ये असतो पापपुंनकु ॥ भुगती भये
नीराले ॥ सोकोरहे भीनकरतासे ॥ परमतंत
अंतकाले ॥२२॥ ज्यौघटकेवीनसेघटकेनभ ॥ मा
हासुंन्यजाईसमाई ॥ त्यौ असकेपरमकारं
नतंन ॥ घुटतकृतामेलाई ॥२३॥ एहीअनुकर
मकृतारकरतके ॥ समरेफेरीयसराई ॥ अव
धअवधकालंतएहीविधसे ॥ रचीतअखील
रचनाई ॥२४॥ पणकरतानीजसकलअस
के अवधकालवीनुसेई ॥ आद्यअंतअजमा
लअजोनीक ॥ सदाअखंडीतओई ॥२५॥ पर
मअसहंमतेहीपतीनके ॥ सकलअसइसत
ई ॥ कल्पकल्पवीतजाईआयुपुनी ॥ कहंनस्यो
जकरताई ॥२६॥ कृताखोजओरुक्रतवंतकी
इति ॥ वीवीधीभासवीस्ताई ॥ केहंकुवेरभवके
रफरकगत्य ॥ देवंनतेनदरसाई ॥२७॥ दरुस्र
परसकरनंनकारंनकृत ॥ जिहीजीनसेजंम

जेहं ॥ केहे करुणासागर करुणाकर ॥ सुनीयो
सकलसबेही ॥ २८ ॥ इती श्रीसकलचंतामणीने
थसंमपुष्पाः ॥ अंग ॥ १८ ॥ ॥ समापते ॥
संवत् १९२५ ॥ नाआसोवीदी ॥ धावारशुकरसं
पुर्णः ॥